ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

आश्विन २०८२ अक्टूबर २०२५

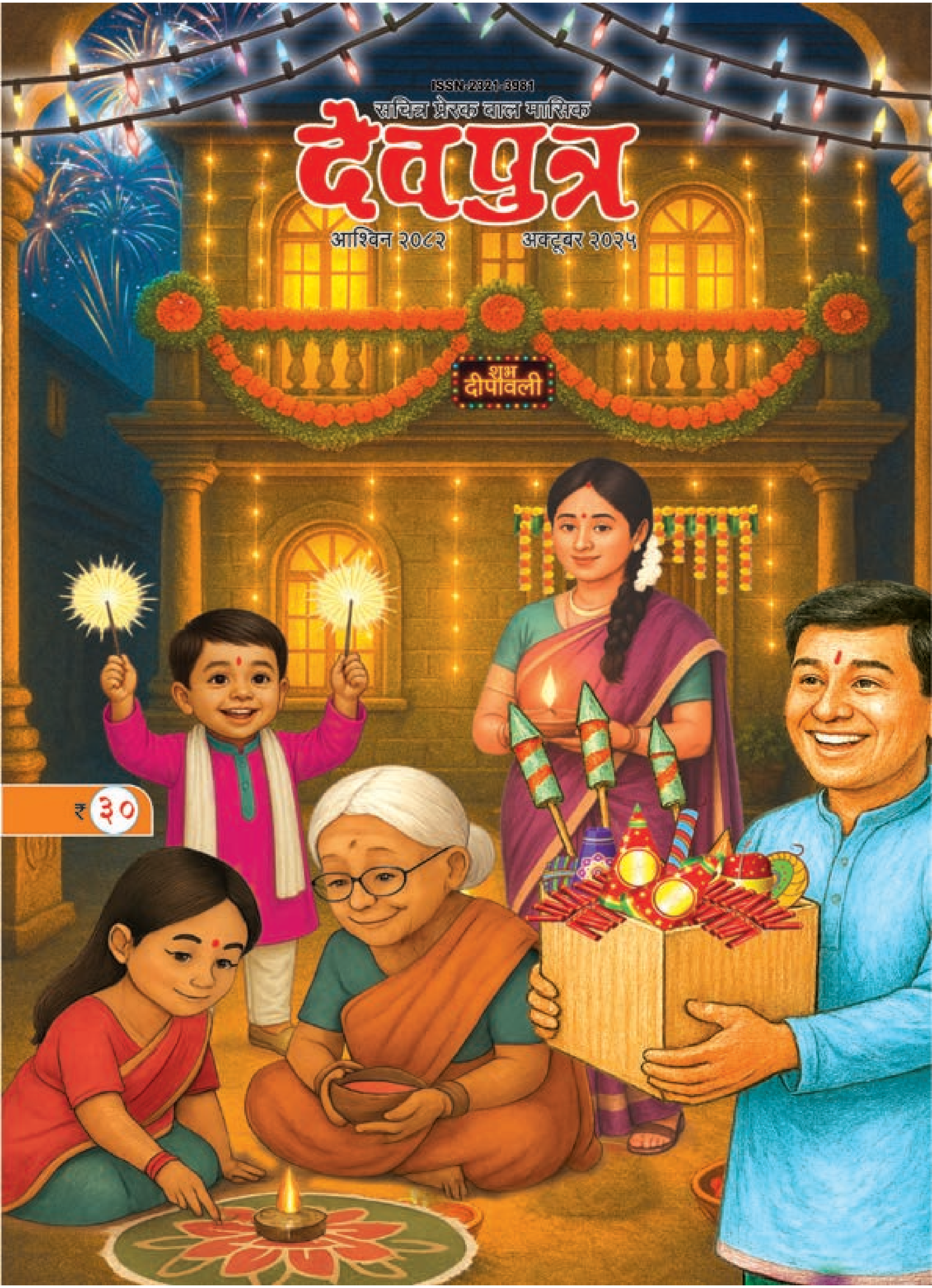

₹ ३०

कविता

ओ मेरे दीपक माटी के

– डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

प्रतिपल, प्रतिक्षण जलते जाओ– ओ मेरे दीपक माटी के।
भू का सारा तिमिर मिटाओ– ओ मेरे दीपक माटी के।।

जलना ही है नियति तुम्हारी,
उम्र इसी में गुजरे सारी,
जलकर सबको सुख पहुँचाओ–
ओ मेरे दीपक माटी के।।

जगमग–जगमग जग हो जाए,
हर मुखड़ा मुसकान लुटाए,
ऐसा एक पंथ दिखलाओ–
ओ मेरे दीपक माटी के।।

जिस कुम्हार ने तुझे बनाया,
कोमल हाथों से सहलाया,
उसके श्रम का मोल चुकाओ–
ओ मेरे दीपक माटी के।।

पूरी दीपावली तुम्हीं से,
उजियारी हर गली तुम्हीं से,
तुम भी दीपावली मनाओ–
ओ मेरे दीपक माटी के।।

– गुरुग्राम (हरियाणा)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

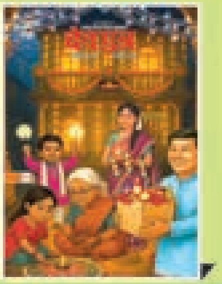

आश्विन २०८२ • वर्ष ४६
अक्टूबर २०२५ • अंक ४

संपादक
गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक
नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२५० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२५०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१८० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)
कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित।

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

वैसे तो वह अत्यन्त श्रेष्ठ ऋषि कुल की ही संतान था। वीर था, बलवान था, दृढ़ निश्चयी था, बहुत पढ़ा-लिखा और प्रखर बुद्धिमान था। वह वेद शास्त्रों का ज्ञाता था। उसकी बुद्धि बड़ी वैज्ञानिक दृष्टि सम्पन्न थी। अत्यंत निर्भय और दुर्दम्य साहसी, असंभव को संभव बनाने के लिए आतुर रहने वाला। उसका निवास स्थान भी बहुत सुन्दर और अत्यन्त सुरक्षित था। वह अत्यधिक धनवान था और उसका प्रभाव सारे संसार पर व्याप्त था। उसने किसी के आगे झुकना सीखा ही न था इसलिए डर के कारण उसका वर्चस्व सभी मानते थे। यानी प्रथम दृष्टि में उसके पास वह सब था जो आज के युग में भी आप जैसे कई बच्चे जीवन की सबसे उत्तम उपलब्धियाँ मानते हैं।

लेकिन एक दिन उसकी ये सारी विशेषताएँ भी उसे बचा न सकीं। वैसे मृत्यु तो सभी की सुनिश्चित ही होती है अत: उसकी भी हुई। मनुष्य के न रहने पर भी उसका यश अमर रह सकता है लेकिन उसके नाम पर कोई अपने बच्चे का नाम भी रखना पसन्द नहीं करता। वह किसी का आदर्श नहीं, प्रिय नहीं, पूज्य नहीं। विजयादशमी के लिए प्रतिवर्ष उसका पुतला-जलाकर लाखों वर्ष बाद भी लोग उसके प्रति घृणा प्रकट करते हैं। उसकी पराजय का उत्सव मनाते हैं उसको मारने वाले को भगवान मानकर उनकी जय-जयकार करते हैं।

आप समझ ही गए होंगे कि मैं राक्षसराज रावण की बात कह रहा हूँ जिसे प्रभु श्री. रामचन्द्र जी ने विजयादशमी के दिन ही मारा था।

भैया बहिनो! यदि हम में मानवता नहीं, परोपकार की भावना नहीं, दया, करुणा और विनम्रता नहीं तो उपर्युक्त सारे गुण सारी उपलब्धियाँ भी हमें 'अच्छा' कहलाने योग्य नहीं बना सकती। चरित्र समस्त गुणों का, मानव मूल्यों का एकत्र नाम है। हमारे शास्त्र कहते हैं 'शीलं सर्वत्र वै धनम्'। इसलिए **जीवन में कितनी भी योग्यता प्राप्त करके यदि हम चरित्र को उत्तम नहीं बना पाए तो वे योग्यताएँ न हमारे व्यक्तिगत जीवन में सुखी बनाती है न ही समाज, राष्ट्र व मानवता के लिए उपयोगी रह पाती हैं इसलिए समस्त योग्यताओं के साथ-साथ चरित्र की भी श्रेष्ठता अवश्य अर्जित करो।** अपने दुर्गुणों पर विजय पाकर ही सच्ची विजयादशमी मनाई जा सकती है। दशहरे, दीपावली की शुभकामनाएँ।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- बंटी और मनी -डॉ. शील कौशिक ३२

छोटी कहानी

- रावण जल गया -डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा' ०५
- कोयल कब गाए ? -सनत् २६
- रोबोट्स की दीवाली -प्राजक्ता देशपांडे ३९

आलेख

- दीवाली से जुड़ी कथाएँ -राजेश गुजर ०८
- अच्छी फसल आनंद के त्योहार -नरेन्द्र देवांगन १५
- अष्ट लक्ष्मी -सुशील सरित ४६

लघु आलेख

- बड़ा अनूठा है..... -डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी ४२

बाल लेखनी

- पिताजी की गलती -अन्वि शंकर गुप्ता २२

लघुकथा

- दीपक और अँधेरा -डॉ. रामनिवास 'मानव' ११

एकांकी

- दृढ़ निश्चय -उमेश कुमार चौरसिया १२

कविता

- ओ मेरे दीपक माटी के -डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल ०२
- दुर्गावती रण में निकली -प्रभुदयाल श्रीवास्तव ०५
- दीपों की बारात -डॉ. देशबन्धु शाहजहाँपुरी ३०
- सबसे कहती है दीवाली -बलदाऊ राम साहू ४३
- मित्र पधारे -डॉ. मीरा सिंह 'मीरा' ५०
- दीप जलाओ -पंकज मिश्र 'अटल' ५१

स्तंभ

- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी १०
- छः अँगुल मुस्कान - १७
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १८
- स्वास्थ्य -डॉ. मनोहर भण्डारी २४
- मैं संघ हूँ -नारायण चौहान २५
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल २८
- पुस्तक परिचय - ४०
- आपकी पाती - ४४

बौद्धिक क्रीडा

- चोर कौन ? -देवांशु वत्स ११
- क्या गायब ? -संकेत गोस्वामी ३१
- भूल-भुलैया -चाँद मोहम्मद घोसी ४८

अनुवाद

- बाँहों में आकाश -मूल मराठी-मालती दाण्डेकर -हिन्दी अनुवाद-पद्मा चौगांवकर ३४

प्रसंग

- गाँधी जी की विनम्रता -डॉ. चक्रधर 'नलिन' १४

चित्रकथा

- लेने के देने -देवांशु वत्स २३
- लाल बुझक्कड़ काका के...... -देवांशु वत्स ४१

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ। विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** **चालू खाता (Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **''मन्दसौर संजीत मार्ग SSM''** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

रावण जल गया

– डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'

पिछले दो दिन से निहान बहुत उत्साह के साथ कॉलोनी में दशहरे के अवसर पर जलने वाले रावण के निर्माण कार्य में भाग ले रहा था। यहाँ तक कि उसे खाने की भी चिंता नहीं रहती, माँ खाने के लिए आवाज देती रह जाती और वह दौड़ पड़ता वहाँ, जहाँ रावण बन रहा था। कॉलोनी के ही बच्चे मिलकर कहीं से थोड़ी–सी घास, तो कहीं से बाँस के टुकड़े, कुछ गत्ते इकट्ठे कर एक छोटा–सा रावण तैयार कर रहे हैं।

निहान ने तो चित्रकार नमिता दीदी को भी काम सौंप दिया कि वो इन गत्तों से अच्छा रंग–बिरंगा एक मुकुट और एक तलवार रावण के लिए तैयार कर दे। नितेश के दादाजी ने बच्चों को उत्साह देखा तो उन्हें राम लीला के कुछ दृश्यों का अभ्यास भी करा दिया ताकि दशहरे के दिन वह अभिनय करते हुए समापन के साथ राम जी रावण का दहन करेंगे और कॉलोनी में फट – फटाफट... के शोर से हर्ष छा जाएगा। जिसमें निहान ने आगे रहकर स्वयं के लिए राम जी की भूमिका का चयन किया था।

किन्तु ये क्या दो दिन से उत्साह के साथ घूम रहा निहान आज दशहरे के दिन मुँह बिसूरे अपने कमरे में क्यों बैठा है, दादाजी हैरान हैं। उन्होंने कमरे में जाकर देखा तो निहान अनमना–सा बिस्तर पर करवटें बदल रहा था।

''क्या बात है बच्चे! बाहर रावण खड़ा हो रहा है, जलने की तैयारी में और तुम यहाँ बैठे हो?''

''हम्म! मुझे नहीं जाना वहाँ।'' निहान रूठा–सा बोला।

''अरे क्यों! क्या बात हो गई? दो दिन से तो बड़े उत्साह के साथ लगे हुए थे!''

''पता है दादाजी! राजू भैया बहुत खराब हैं.... उन्होंने मेरे साथ चीटिंग की।''

''ऐसा नहीं कहते बेटा! वो बड़े हैं तुमसे।'' दादा जी ने समझाया।

''होंगे बड़े किन्तु सचमुच खराब हैं।'' वह फिर अपनी बात पर जोर देते हुए बोला। दादाजी समझ गए किसी बात को लेकर निहान का मन खराब हुआ है।

''अच्छा क्या बात हुई मुझे बताओ।'' दादा जी ने प्यार से पूछा।

''पता है परसों उन्होंने मुझसे कहा था कि इस बार मुझे राम बनाएँगे और मैं रावण को मारूँगा।''

''तो...?''

''तो क्या अब कहते हैं कि रावण को मनोज मारेगा... वह राम बनेगा।''

''उससे क्या अंतर पड़ता है बेटा कोई भी मारे.... बात तो रावण के मरने की है।'' दादाजी उसे सहज करने के उद्देश्य से कहा।

''मुझे पड़ता है दादाजी! पता है कितना प्रसन्न था मैं? अपनी कक्षा में भी सबसे कह दिया था कि मैं राम बनूँगा रावण जलाऊँगा.., सबको फोटो खींचकर भेजूँगा। फेस बुक पर डालूँगा कि मैं राम बना और रावण को मारा। अब सब मेरा मजाक बनाएँगे....।

मुझे बहुत गुस्सा आ रहा है।''

''हम्म गुस्सा यानी क्रोध, क्योंकि तुम्हें राम नहीं बनाया, तुम रावण नहीं मार सके, इस बात से तुम्हारा ईगो यानी अहंकार आहत हुआ है यही न?''

''बिलकुल यही... इन्सल्टिंग लग रहा है मुझे।''

''इसका अर्थ राजू का निर्णय सही है।''

''कैसा निर्णय दादाजी?'' निहान झुंझलाकर बोला।

''तुम्हें राम न बनाने का।''

''आप मेरे दादाजी हैं या राजू भैया के?'' निहान चिढ़कर बोला।

''तुम्हारा हूँ इसीलिए तो कह रहा हूँ।''

''क्या कह रहे हैं आप, पता भी है?''

''हाँ बिलकुल पता है, यही कि एक रावण दूसरे रावण को कैसे जला सकता है?''

''अब ये दूसरा रावण कौन पैदा हो गया?''

''तुम।''

''दादाजी....! आप भी मेरी खिंचाई कर रहे हैं।''

''बिलकुल नहीं बेटा! मैं तो तुम्हें राम बनाने का प्रयत्न कर रहा हूँ।''

''राम बनाने का!''

''हाँ राम बनाने का, अच्छा बताओ राम के बारे में तुम क्या जानते हो?''

''राम भगवान हैं वे बहुत शांत हैं, अनावश्यक क्रोध नहीं करते, सदैव सही सोच (विवेक) से काम लेते हैं, सच्चा और अच्छा काम करते हैं।'' निहान राम के गुण बताने लगा।

''और रावण के बारे में क्या जानते हो?''

''आचार्य जी ने बताया था कि रावण बहुत विद्वान था किन्तु बड़ा अहंकारी और क्रोधी भी इसी से उसका विवेक साथ छोड़ गया।''

''और?''

''और उसने भगवान राम की पत्नी यानी सीता जी को चुरा लिया परिणामस्वरूप श्रीराम ने उसे मार दिया।''

''इस समय तुम क्या कर रहे हो राजू भैया पर?''

''क्रोध।''

''क्यों?''

''क्योंकि उन्होंने मेरा तिरस्कार किया।''

''यानी तुम्हारे ईगो अर्थात् अहंकार को चोट पहुँची, यही न?''

''अं.... हाँ।'' निहान अचकचा गया, उसके शब्द बीच में छूट गए।

''मेरे बच्चे, रावण कुछ और नहीं हमारे मन के भाव है। वरना राम और रावण नाम राशि तो दोनों की एक ही है। बस एक अपने धैर्य, सहृदयता, विनम्रता जैसे गुणों से महान बन पूजनीय हो गए और देवता कहलाए। दूसरा अपने अहंकार, क्रोध, दुर्व्यसनों के रहते संसार में उपेक्षित हुए दानव कहलाए, जिनके पुतले को आज भी दुनिया मार रही है।

''ओहो.. देवता और दानव... अच्छे से समझाया दादाजी!''

''तो मैं मान लूँ कि तुम समझ गए कि उस घास-फूंस के रावण को मारने से हम राम नहीं बनेंगे बल्कि अपने भीतर बैठे रावण को मारने से राम बनेंगे।''

''बात समझ में आ गई दादाजी! अब मैं सचमुच का राम बनने का प्रयास करूँगा और रावण भी मारूँगा।''

''आं...?'' (दादाजी ने चौंकते हुए कहा।)

''अपने भीतर का...।'' कहते हुए दादा जी और निहान जोर से हँस पड़े।

''अब कहाँ चल दिए मेरे नन्हें राम?''

''बाहर अपने साथियों के पास।'' कहते हुए निहान बाहर बच्चों के समूह में शामिल हो गया।

- भोपाल (म. प्र.)

कविता – रानी दुर्गावती जयन्ती : ५ अक्टूबर

दुर्गावती रण में निकलीं

प्रभुदयाल श्रीवास्तव

जब दुर्गावती रण में निकलीं, हाथों में थीं तलवारें दो।

धीर वीर वह नारी थी, गढ़मंडल की वह रानी थी।
दूर-दूर तक थी प्रसिद्ध, सबकी जानी-पहचानी थी।।
उसकी ख्याती से घबराकर, मुगलों ने हमला बोल दिया।
विधवा रानी के जीवन में, बैठे ठाले विष घोल दिया।।
मुगलों की थी यह चाल कि अब, कैसे रानी को मारें वो।
जब दुर्गावती रण में निकलीं, हाथों में थीं तलवारें दो।।

सैनिक वेश धरे रानी, हाथी पर चढ़ बल खाती थी।
दुश्मन को गाजर-मूली-सा, काटे आगे बढ़ जाती थी।।
तलवार चमकती अंबर में, दुश्मन का सिर नीचे गिरता।
स्वामी भक्त हाथी उनका, धरती पर था उड़ता-फिरता।।
लप-लप तलवार चलाती थी, पल-पल भरती हुँकारें वो।
जब दुर्गावती रण में निकलीं, हाथों में थीं तलवारें दो।।

जाती थी जहाँ-जहाँ रानी, बिजली-सी चमक दिखाती थी।
मुगलों की सेना मरती थी, पीछे को हटती जाती थी।।
दोनों हाथों वह रणचंडी, कसकर तलवार चलाती थी।
दुश्मन की सेना पर पिलकर, घनघोर कहर बरपाती थी।।
झन-झन ढन-ढन बज उठती थी, तलवारों की झंकारें वो।
जब दुर्गावती रण में निकलीं, हाथों में थीं तलवारें दो।।

पर रानी कैसे बढ़ पाती, उसकी सेना तो थोड़ी थी।
मुगलों की सेना थी अपार, रानी ने आस न छोड़ी थी।।
पर हाय राज्य का भाग्य बुरा, बेईमानी की घरवालों ने।
उनको शहीद करवा डाला, उनके ही मनसबदारों ने।।
कितनी पवित्र उनके तन से, थीं गिरीं बूँद की धारें दो।
जब दुर्गावती रण में निकलीं, हाथों में थीं तलवारें दो।।

रानी तू दुनिया छोड़ गई, पर तेरा नाम अमर अब तक।
और रहेगा नाम सदा, सूरज-चंदा नभ में जब तक।।
हे देवी! तेरी वीर गति पर, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
तेरी अमर कथा सुनकर, दृग में आँसू आ जाते हैं।।
है भारत माता से विनती, कष्टों से सदा उबारें वो।
जब दुर्गावती रण में निकलीं, हाथों में थीं तलवारें दो।।

नारी की शक्ति है अपार, वह तो संसार रचाती है।
माँ पत्नी और बहन बनती, वह जग जननी कहलाती है।।
बेटी बनकर घर आँगन में, हँसती खुशियाँ बिखराती है।
पालन-पोषण सेवा-भक्ति, सबका दायित्व निभाती है।।
आ जाए अगर अवसर कोई, तो दुश्मन को ललकारें वो।
जब दुर्गावती रण में निकलीं, हाथों में थीं तलवारें दो।।

– छिंदवाड़ा (म. प्र.)

दीवाली से जुड़ी कथाएँ

– राजेश गुजर

दीपावली हमारा सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महापर्व है। प्राचीनकाल से इसका मनाया जाना चला आ रहा है। दीपावली महोत्सव कब से प्रारंभ हुआ, इसके संबंध में अलग-अलग कथाएँ हैं। अलग-अलग कथाओं के आधार पर ही अलग-अलग धारणाओं से दीपावली का पूजन होता है। दीपावली से संबंधित कुछ कथाएँ इस प्रकार हैं–

लंकापति रावण का वध करके श्रीरामजी इस दिन अयोध्या आए तो अयोध्यावासियों ने घर-घर दीपक जलाकर रामजी का स्वागत किया था। उसी दिन की स्मृति में सत्य का समर्थन और आर्य संस्कृति को शाश्वत बनाए रखने के अभिप्राय से आज भी उस विजय-पर्व को दीपावली के रूप में दीप जलाकर मनाते आ रहे हैं। इस दिन तो जलाते ही हैं, साथ ही लक्ष्मीजी एवं गणेशजी का पूजन भी करते हैं।

बाद में पटाखे आदि की धूमधाम भी करते हैं। इस पर्व पर लक्ष्मी के पूजन से संबंधित एक पौराणिक कथा प्रचलित है– एक बार देवराज इंद्र द्वारा अपने को अपमानित समझकर दुर्वासा ऋषि ने उन्हें शाप दे दिया कि तीनों लोकों में लक्ष्मी का नाश हो जाए। लक्ष्मी के विनाश से सारे संसार में हाहाकार मच गया। बाद में देव और दैत्यों द्वारा मिलकर समुद्र मंथन किया तो समुद्र से प्राप्त १४ रत्नों में लक्ष्मीजी भी फिर से अवतरित हुईं। इसलिए इस दिन लक्ष्मी की पूजा होती है। दूसरे लक्ष्मी धन की देवी हैं, इसलिए धन प्राप्ति की कामना से भी उनका पूजन किया जाता है।

विष्णु-पुराण में दीपावली का पूजन राजा बलि की दानशीलता की स्मृति में किया जाता है, बताया गया है। दैत्यराज बलि ने अपनी शक्ति से तीनों लोकों पर अपना शासन स्थापित कर रखा था। देवता आतंकित हो गए और वे भगवान विष्णु के पास पहुँचे। भगवान विष्णु ने समस्या का समाधान सोचा और वामन रूप धारण करके ब्राह्मण वेश में राजा बलि से भिक्षा माँगने गए। भिक्षा में उन्होंने तीन पग भूमि माँगी।

राजा बलि दानी थे। उन्होंने भगवान विष्णु को पहचानने के बाद भी तीन पग भूमि देना स्वीकार कर लिया। भगवान ने दो पग में ही तीनों लोकों को नाम लिया। राजा बलि से तीसरा पग रखने के लिए स्थान पूछा तो राजा बलि ने अपने को ही अर्पित कर दिया।

राजा बलि की दानशीलता से भगवान विष्णु अत्यन्त प्रसन्न हुए और पाताल लोक उन्हें सौंप दिया और साथ ही यह वरदान भी दिया कि आज के दिन से इस पर्व पर जो अपने घर–द्वार जगमगाएगा, उसके घर में लक्ष्मी का आगमन होगा। इसी स्मृति में दीपावली के दिन दीप जलाकर घर सजाए जाते हैं। लक्ष्मी का पूजन होता है। और खुशियाँ मनाई जाती है।

लक्ष्मी–पूजन के औचित्य की दूसरी झलक देवी भागवत–पुराण में इस प्रकार है– एक बार दैत्यों ने मृत्युलोक में इतना अत्याचार किया कि चारों ओर त्राहि–त्राहि मच गई। देवी महाकाली से दैत्यों का यह अत्याचार न देखा गया। उन्होंने क्रुद्ध होकर राक्षसों का संहार करना प्रारंभ कर दिया।

सारे राक्षसों को मारने के पश्चात् भी उनकी क्रोधाग्नि शांत न हुई तो उन्होंने विश्वसंहार की सोची। तभी सृष्टि की रक्षा के लिए भगवान शंकर उनके चरणों में आकर लेट गए। महाकाली फिर भी नहीं मानीं और उनके वक्षस्थल पर पैर रखकर आगे बढ़ने का विचार किया। किन्तु शंकरजी के वक्षस्थल पर महाकाली का पैर पड़ते ही महाकाली की क्रोधाग्नि शांत हो गई। इसी की स्मृति में महाकाली के सौम्य रूप लक्ष्मी का पूजन होता है।

बौद्ध लोग इस दीपोत्सव–पर्व को हिंदुओं की दीपावली से ठीक पंद्रह दिन पूर्व आश्विन–पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा) के दिन मनाते हैं। बर्मी बौद्धों के दीपोत्सव के साथ यह पौराणिक आख्यान जुड़ा है– बुद्ध अपनी दिवंगत माता को अपने स्वर्गीय आवास 'त्रयत्रिस' में धर्मोपदेश देने गए। उपदेश की अवधि की समाप्ति पर जब वह भूतल पर आने लगे तो देवों ने उनका मार्ग ज्योतिर्मय कर दिया।

इस धार्मिक आख्यान के आधार पर ही वे इस दिन को दीपोत्सव के रूप में मनाते हैं। बर्मी भाषा में इस दीपोत्सव को ताण्डिन्यु कहते हैं।

जापान में यह पर्व सितंबर में मनाया जाता है। इस दिन जापानी लोग बाग-बगीचों में जाकर प्रत्येक पेड़ की डाल पर लालटेन या कंदिल टाँग देते हैं। दूसरे दिन नवीन वस्त्र पहनते हैं। रात्रि में नृत्य गायन का कार्यक्रम होता है। इस दिन घर का दरवाजा बंद नहीं किया जाता। यहाँ तीन दिनों तक झाड़ू लगाना अशुभ माना जाता है, समस्त मंदिर सजा दिए जाते हैं और रंग-बिरंगे कागजों से अलंकृत कर दिए जाते हैं।

चीन में भी भारत की तरह घरों की सफाई तथा सजावट की जाती है। यहाँ के लोग घर के प्रवेश द्वार पर लाल कागज की दो मानव आकृतियाँ टाँग देते हैं। इस प्रथा को चीनी भाषा में 'मैन-शैन' या 'नईन हुआ' कहते हैं। लोगों का विश्वास है कि इन आकृतियों से वर्षभर घर की रक्षा होती है। हमारे देश के व्यापारियों की तरह यहाँ के व्यापारीगण दुकानों में शुभ-लाभ के स्थान पर अपनी भाषा में शुभ वाक्य अंकित करते हैं। इस देश में इस दिन सफेद बत्ती नहीं जलाई जाती क्योंकि सफेद बत्ती को चीनी लोग अशुभ मानते हैं।

तो आइए, हम भी उत्साह, उमंग और बिना भेदभाव, शांति से यह दीपोत्सव मनाएँ।

- महेश्वर (म. प्र.)

अर्जुन का इन्द्रलोक जाना

- मोहनलाल जोशी

अर्जुन की तपस्या और वीरता पर भगवान शिव प्रसन्न हो गए थे। तभी इन्द्र का सारथि मातलि आया। उसने अर्जुन को दिव्य रथ पर बैठाया। फिर उसे स्वर्ग लोग ले गया।

इन्द्र के दरबार में अर्जुन का बहुत स्वागत हुआ। वह इन्द्र के साथ आधे सिंहासन पर बैठा था। बाद में इन्द्र ने अर्जुन को सभी दिव्यास्त्र प्रदान किए। उन्होंने सभी दिव्यास्त्रों की शिक्षा भी दी।

इन्द्रलोक में अर्जुन ने संगीत कला का भी ज्ञान प्राप्त किया। गन्धर्वराज चित्रसेन उसके गुरु बने।

एक दिन उर्वशी नामक अप्सरा अर्जुन से बोली- ''तुम मेरे से गांधर्व विवाह करो।'' अर्जुन ने मना कर दिया। उर्वशी ने कुपित होकर शाप दे दिया। उसने अर्जुन से कहा- ''तुम बृहन्नला (नपुंसक) बन जाओगे।''

अर्जुन ने चित्रसेन को सारी बात बताई। चित्रसेन ने कहा- ''तुम एक वर्ष तक बृहन्नला रहोगे।

फिर ठीक हो जाओगे। यह शिक्षा तुम्हारे अज्ञातवास में काम आएगी।''

- बाड़मेर (राजस्थान)

लघुकथा

दीपक और अँधेरा

डॉ. रामनिवास 'मानव'

साँझ ढलने पर अँधेरा बढ़ा, तो माँ ज्योति ने अपने बेटे दीपक से कहा- ''दीपक बेटे! अँधेरा हो गया है, जाओ और उसे दूर भगाकर आओ।''

माँ की बात सुन दीपक ने बाहर झाँका, तो अँधेरे को देखकर उसके मन में भय पैदा हो गया। अत: बोला- ''माँ! मैं तो छोटा-सा हूँ और अँधेरा बहुत बड़ा है। उसके एक वार से ही मैं तुरंत बुझ जाऊँगा।'' तब उसे समझाते हुए माँ बोली- ''बेटे! तुम सूर्यपुत्र हो, तुम्हारा अँधेरे से यूँ डरना और डरकर घर में दुबककर बैठना अच्छी बात नहीं है। यह तुम्हारे परिवार की परंपरा भी नहीं है।''

फिर उसे उदाहरण देकर समझाते हुए कहा- ''सिंह-शावक को देखो, वह कभी नहीं डरता। छोटा होने के बावजूद वह हाथियों के झुंड में भी निर्भय होकर घुस जाता है। इसी प्रकार, तुम्हारे पिता सूर्य भी जब आकाश उदित होते हैं, तो घनघोर अँधेरा और सारे निशाचर पल-भर में डरकर छुप जाते हैं। इसलिए डरो मत; हिम्मत रखो और निर्भय होकर आगे बढ़ो। डरपोक अँधेरे को तुम भी, चुटकी बजाते ही, मारकर भगा सकते हो।'' फिर दीपक को एक नीति की बात बताते हुए उसने कहा- ''हमेशा याद रखो, जिनमें साहस, हिम्मत और बल होता है, संसार में वही विजयी होते हैं। जो कमजोर होते हैं, वे डरकर बीच रास्ते में ही रुक जाते हैं। कभी मंजिल तक नहीं पहुँच पाते।''

माँ की प्रेरणादायी बातें सुनकर नन्हे दीपक में भी साहस जाग उठा। वह तुरंत बाहर आया; अँधेरे पर दृष्टि डाली, तो पलक झपकते ही, अँधेरा डरकर भाग खड़ा हुआ। दीपक और अँधेरे का यह द्वंद्व तभी से जारी है। किन्तु अँधेरा कितना भी घना क्यों न हो, उस पर हमेशा दीपक ही भारी पड़ता है।

- नारनौल (हरियाणा)

दृढ़ निश्चय

– उमेश कुमार चौरसिया

पात्र–

लाल (लाल बहादुर शास्त्री)

माली, नाविक, कुछ अन्य बच्चे,

सूत्रधार।

दृश्य–१

(मंच पर कुछ बच्चे बात कर रहे हैं। एक ६ वर्षीय लड़का लाल भी उनके साथ है।)

एक– चलो मित्रो! फूल तोड़ने चलते हैं।

सभी बच्चे– हाँ, –हाँ, चलो चलो।

लाल– किन्तु फूल तोड़ने क्यों?

दूसरा– इसलिए ताकि रंग–बिरंगी तितलियों को पकड़ सकें।

लाल– तितलियाँ तो मुझे भी बहुत पसंद हैं।

तीसरा– हाँ तो चलो ना जल्दी से।

लाल– पर तुम लोग तितलियों को मारोगे तो नहीं ना?

एक– अरे नहीं रे! हम तो फूल तोड़ेंगे, तितलियाँ पकड़ेंगे, उनके साथ खेलेंगे और बस वापस छोड़ देंगे।

लाल– तब तो ठीक है, चलो!

(सभी बच्चे फूलों को तोड़ने का अभिनय करते हैं। तभी एक ओर से माली लाठी लिए हुए आ जाता है।)

माली– (बच्चों को देखकर) अरे ये क्या कर रहे हो? ठहर जाओ बदमाशो! फूल तोड़ रहे हो मेरे उद्यान के... रुक जाओ अभी मजा चखाता हूँ तुमको.... (कहते हुए बच्चों की ओर दौड़ता है, तो बच्चे उसे देखकर भागते हैं। सभी बच्चे भाग जाते हैं किन्तु वह लाल माली की पकड़ में आ जाता है।)

माली– (कान मरोड़ते हुए) कहाँ जाएगा बचकर बच्चू..? क्यूँ तोड़ रहा था फूलों को... हैं?

लाल– (घबराकर) जी... मैं.... तो....

माली– (लाठी से मारते हुए) क्या मैं मैं लगा रखी है.... मुझे सब पता है... तुम लोग ही रोज मेरे उद्यान के फूलों को तोड़ते हो... तुम ही हो फूलों के चोर.....

लाल– नहीं, नहीं माली काका! मैं.... मैं तो आज ही आया हूँ.....

माली– अच्छा! एक तो फूल तोड़ता है और ऊपर से झूठ भी बोलता है... (फिर से कान मरोड़ते हुए लाठी मारता है।)

लाल– नहीं... नहीं.... मैं सच कह रहा हूँ.... मैं आज ही आया हूँ तितलियों के लिए...

माली– मैं सब जानता हूँ... पिटाई से बचने के लिए सब ऐसा ही बोलते हैं।

लाल– नहीं मैं कभी झूठ नहीं बोलता... मैं सच कह रहा हूँ।

माली– बड़ा आया सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र... (कहते हुए फिर से पीटने लगता है।) लगता है तेरे पिताजी ने तुझे बहुत छूट दे रखी है।

लाल– मेरे पिताजी नहीं हैं।

माली– फिर झूठ।

लाल– नहीं माली काका! सच में मेरे पिताजी नहीं हैं, वे भगवान के पास चले गए हैं। (सुनकर माली रुक जाता है।)

माली– (थोड़ा प्यार से) ओ! पिता नहीं हैं तब तो बेटा तुम्हें समझदारी रखनी चाहिए ना.... तुम क्यूँ इन बदमाश बच्चों की संगत में फूल तोड़ने चले आए.... देखो मेरे उद्यान का कितना नुकसान कर दिया तुम लोगों ने।

लाल– (रूआँसे स्वर में) मुझे क्षमा कर दो माली काका! मुझसे गलती हो गई। अब मैं कभी भी

कोई ऐसा काम नहीं करूँगा जिससे किसी का भी कोई नुकसान हो या किसी को कष्ट हो।

दृश्य-२

(मंच पर कुछ बच्चे बात कर रहे हैं। लाल भी उनके साथ है।)

एक- आज तो बड़ा मजा आया मेले में।

दूसरा- मैं तो बड़े वाले झूले में भी खूब देर तक झूला.... आ हा हा मजा आ गया मित्रो!

तीसरा- सच में साथियों मेले में घूमने का मजा ही अलग है। क्यों लाल?

लाल- मेला हो और सब मित्रों का साथ हो तो आनंद दो गुना हो जाता है।

एक- चलो अब जल्दी करो, हमें गंगा के पार पुनः अपने गाँव लौटना है, सांझ हो गई तो नाव नहीं मिलेगी।

सभी बच्चे- हँ हाँ चलो जल्दी से.... (सभी जाने लगते हैं तो लाल रुक जाता है और अपनी जेब टटोलता है, उसमें पैसे नहीं है।)

एक- (पीछे देखकर) अरे कहाँ रुक गए लाल, चलो ना जल्दी से...

लाल- तुम लोग चलो मैं बाद में आता हूँ।

दो- बाद में क्यों?

लाल- वो मुझे मेले से कुछ लेना था उसे भूल गया। तुम लोग चलो नाव में मैं बाद में आता हूँ।

तीसरा- ठीक है जैसी तुम्हारी मर्जी... हम तो चलते हैं। (सभी आगे चलते हुए मंच से बाहर चले जाते हैं।)

लाल- (स्वागत) मेरे तो सारे पैसे ही खर्च हो गए। नाव के किराए के लिए तो पैसे हैं ही नहीं.... मित्रों के साथ जाता तो उनसे पैसे माँगने पड़ते... मुझे अपनी सुविधा के लिए किसी से माँगना उचित नहीं लगता... लेकिन फिर मैं जाऊँगा कैसे? (कुछ सोचकर निश्चय करता है) हाँ, मैं तैरकर जाऊँगा...

गंगा नदी चौड़ी है तो क्या हुआ मैं तैरकर पार कर ही लूँगा। (कहते हुए वह आगे की ओर बढ़ता है। तभी पीछे से एक नाविक आता है।)

नाविक– अरे अरे कहाँ चल दिए बच्चे ?

लाल– अपने गाँव जा रहा हूँ।

नाविक– हाँ, पर उसके लिए तो नदी पार करनी होगी न ? तो बैठो हमारी नाव में... उधर नदी की ओर कहाँ चल दिए ?

लाल– मैं तैरकर जाऊँगा।

नाविक– नदी बहुत गहरी है और पाट भी बहुत चौड़ा है बेटा! तुम नहीं तैर पाओगे। आ जाओ हमारी नाव में।

लाल– नहीं, मैं नाव में नहीं बैठ सकता, मेरे पास किराए के पैसे नहीं है। इसलिए तैरकर ही जाऊँगा।

नाविक– नहीं बेटा! तुम अभी बच्चे हो... गंगा अभी उफान पर है उसमें बहुत खतरा है... अच्छा चलो मैं तुमसे पैसे नहीं लूँगा, अब तो बैठ जाओ नाव में।

लाल– नहीं मैं बिना किराया दिए आपकी नाव में कैसे बैठ सकता हूँ... यह तो बिल्कुल गलत है। (कहकर वह तेजी से आगे चल पड़ता है।)

नाविक– अरे.... लेकिन.... रुको तो... मत जाओ बेटा... बहुत खतरा है नदी में.... अरे रुको तो.... (लाल रुकता नहीं वरन जैसे नदी में कूद पड़ता है। छपाक् की आवाज आती है।) अपने इरादे का पक्का है ये लड़का... लगता है पहुँच ही जाएगा गंगा पार।

(तभी सूत्रधार का प्रवेश।)

सूत्रधार– यह इरादों का पक्का दृढ़ निश्चयी लड़का लाल ही बड़ा होकर सादा जीवन जीने वाला समाज सेवक और भारत का प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री बना।

– अजमेर (राजस्थान)

प्रसंग – गाँधी जयंती २ अक्टूबर

गाँधी जी की विनम्रता

– डॉ. चक्रधर 'नलिन'

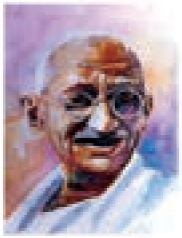

पराधीनता के दिन थे। महात्मा गाँधी उन दिनों अफ्रीका में रहकर स्वाधीनता का संग्राम लड़ रहे थे। वह किसी कार्य से इग्लैण्ड गए थे। जब वहाँ के लोगों को इसकी जानकारी हुई तो उनके विचार जानने के लिए वहाँ एक सभा एक आयोजन किया गया।

सभा में उनको स्वाधीनता आंदोलन पर वक्तव्य देना तथा भोजन का कार्यक्रम था। गाँधीजी स्वत: दिन में सभागार में पहुँच गए और अन्य कार्यरत कर्मचारियों के साथ सब्जी काटने आदि के कार्य में लग गए।

संध्या पाँच बजे अब सभा के आयोजक सभागार में उपस्थित हुए तो गाँधी जी की खोज होने लगी। गांधी जी चुपचाप उठकर खड़े हुए तो आयोजक सन्न रह गए। उन्होंने जब कर्मचारियों से पूछताछ की तो कर्मचारियों ने सच बयान कर दिया। आयोजक दुखी हुए पर गांधी जी ने कहा कि यह आयोजन मेरा था। इसमें कहीं कोई त्रुटि न रह जाए इसलिए मैं समय से पूर्व आ गया।

गाँधी जी ने समारोह में अंग्रेजों की बर्बरता का जब चित्र खींचा तो उपस्थित श्रोताओं ने उनसे सहमति व्यक्त की

गाँधी जी की विनम्रता ने वहाँ सबका मन मोह लिया और सभागार उनकी जय-जयकार से गूँज उठा।

– लखनऊ (उ. प्र.)

अच्छी उपज के आनंद के त्योहार

– नरेन्द्र देवांगन

भारत त्योहारों का देश है। जब हम त्योहार की खुशियाँ मनाते हैं तो उसमें शामिल रहती हैं हमारे देश की हरी-भरी फसलें। त्योहार में मिलते हैं खाने को स्वादिष्ट पकवान। पकवान बनते हैं, अनाज, दालों, फल-फूलों और कंद-मूल से। लगभग एक लाख वर्ष पुरानी बात है। तब हमारे पुरखे जंगलों में रहते थे। उन दिनों वे गुफाओं में निवास करते थे। जंगलों में कई प्रकार के पौधे उगते थे।

कहा जाता है कि एक बार हमारा कोई पुरखा पौधों के पास से निकला। पौधे हिले तो उनके कुछ पके हुए बीज धरती पर गिर गए। पुरखे ने ध्यान से देखा। वह प्रसन्न हुआ कुछ बीज मुट्ठी में दबाए और अपनी गुफा मैं लौटा। अपनी पत्नी को बीज दिखाए।

दोनों ने कुछ बीज चबाए, कुछ बाहर फेंक दिए। बादल घिरे। वर्षा आई। बीज भीगे, उनमें अंकुर फूटे। नन्हे पौधों में पत्तियाँ निकल आईं। वे बढ़ते-बढ़ते पौधे बन गए। उनमें फूल खिले और बीज बने। पुरखे की पत्नी सब देख रही थी। उसने पुरखे को दिखाया।

पुरखे ने हैरान होकर देखा, हूबहू वैसे ही बीज, जैसे वह जंगल से लाया था। वे दोनों खुशी से नाच उठे। उनकी गुफा के आँगन में ही बीज पैदा हो गए थे।

मानव जीवन में शायद वही पहला त्योहार रहा होगा और फिर खेती प्रारंभ हुई। पुरखे ने पौधों को जंगली से पालतू बनाना शुरू कर दिया। हमारी सभ्यता उसी दिन से प्रारंभ हुई। आज मनुष्य और फसलों का अटूट साथ है, क्योंकि फसलें हमें भोजन देती हैं।

पुरखों ने भरपूर उपज देखकर त्योहार मनाए। कहने का मतलब यह कि अच्छी फसल और बढ़िया उपज की खुशी में त्योहार मनाए जाने लगे। जब फसलें तैयार हो जाती है, तो कई क्षेत्रों के लोग तो पहले फसलों को अपने इष्ट देवताओं को चढ़ाते हैं।

सूर्य और प्रकृति को भेंट करते हैं। अच्छी उपज देने के लिए प्रकृति और धरती माता को धन्यवाद देते हैं।

हजारों वर्ष से पकवान अलग–अलग रूपों में लोगों को आनंदित करते आ रहे हैं। दुर्गा पूजा होती है और देवी के लिए खिचड़ी का 'मूल भोग' लगता है। उसके बाद दीपावली में लक्ष्मी को गन्ने से सजाया जाता है। गेहूँ के आटे की पूरियाँ बनती हैं और बनती है बिना नमक के सादा सब्जी। प्रसाद में गन्ना चबाते हैं और नारियल के लड्डू खाते हैं। यह तो हुई पश्चिम बंगाल की बात।

उत्तरी भारत में खील–बताशों और तरह–तरह के पकवानों से लक्ष्मी का भोग लगता है। खील बिखरा कर भरपूर उपज की प्रार्थना की जाती है। देश के कई भागों में इस दिन चिवड़े और शकरपारे खूब बनाए जाते हैं। हलवा, पूरी, खीर और पूए तो पकते ही हैं। गोवर्द्धन पूजा में अन्ना का पहाड़ 'अन्नकूट' बनाकर पूजा करते हैं। भैयादूज को जब बहनें भाइयों को तिलक लगाती हैं, और चावल के 'अक्षतों' को माथे पर लगाती हैं।

पंजाब और जम्मू–कश्मीर में 'लोहड़ी' से सर्दियों के समाप्त होने की सूचना मिलती है। इस त्योहार की शान है, शानदार भोजन। आग में तिल, खील, मूँगफली, मकई और रेवड़ियों की भेंट चढ़ा कर बढ़िया फसल और धन–धान्य की प्रार्थना करके लोग स्वादिष्ट भोजन करते हैं। उसमें मक्का की रोटी, सरसों का साग तो होता है, नारियल चिक्की, पिन्नी, तिलभुग्गा और गजक की मिठास भी होती है। इसके साथ ही 'मकर संक्रांति' का त्योहार भी शुरू होता है। उत्तरी भारत में इस अवसर पर खिचड़ी बनाई जाती है। उत्तराखण्ड में बच्चे इस त्योहार में बने ज्योनार काले कौओं को खिलाते हैं। बच्चे कौओं को पकवान खिलाते हैं हलवा, पूरी, खीर आदि। वे कौओं से अपनी मन की इच्छा भी पूरी करने को कहते हैं। जैसे 'ले कव्वा बड़, मैं कें दे ठुल–ठुल गड़' यानी ले कौवे बड़ा, मुझे देना बड़ा–बड़ा खेत। राजस्थान में इस अवसर पर लोबिया के पकौड़े 'चौड़े' बनाए जाते हैं। बाजरे के आटे को गुड़ के पानी से गूँथ कर, उसमें तिल मिला कर स्वादिष्ट 'गुड़–चंदियाँ' बनाई जाती हैं।

उधर दक्षिण भारत में इस अवसर पर 'पोंगल' का त्योहार मनाया जाता है। नया उबला चावल सूर्य व प्रकृति को चढ़ाते हैं। महाराष्ट्र में बिना बेलन लगाए बाजरे की भाखरी पकाते हैं। मध्यप्रदेश के कई भागों में ज्वार के पूरे पौधों को सजा कर 'ग्यारह' बनाते हैं। बीच में बाल गोपाल को सजा कर गन्ना, आँवला, बेर और फूल चढ़ाते हुए कामना करते हैं। 'बेर फली आँवला, उठो देव साँवला।' घर–घर में हलवा, पूरी और खीर बनती है।

केरल का 'ओणम' त्योहार भी फसलों की कटाई का त्योहार है। इसमें लोग दस दिन तक खुशियाँ मनाते हैं। और ओणम के खास ज्योनारों का आनंद उठाते हैं। ओणम की पहचान है दिन के भोजन की शानदार दावत 'साध्या'। यह शाकाहारी दावत होती है। इसमें इतने ज्योनार, इतने व्यंजन बनते हैं। कि गिनते रह जाओगे। केले के पत्ते पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक सजे एक से एक स्वादिष्ट व्यंजन, चावल, तरह–तरह की रसदार सब्जियाँ, दालें, पापड़, दही, मट्ठा, केले के चिप्स और मीठे व्यंजनों। साध्या में प्याज–लहसुन नहीं पड़ता।

कुछ अन्य व्यंजनों में चावल के साथ मसूर की दाल का 'सांभर'। इमली, टमाटर, काली मिर्च, सौंफ धनिया, मिर्च का 'रसम'। दही, नारियल, एक सब्जी का 'कालन'। कद्दू, नारियल दूध, नारियल तेल में अदरक का 'ओलान'। दो सब्जियों की तीखी–मीठी 'कूट्टकरी'। अदरक, इमली, हरी मिर्च, गुड़ की 'इंजिपुली'। भुनी सब्जियों, सेम, मटर, कटहल, गाजर, कसे नारियल का 'थोरन'। चीनी या गुड़ और नारियल दूध या दूध का गाढ़ा मीठा 'प्रधामन'।

ओणम की दावत में इन व्यंजनों की गिनती करते रह जाओगे।

दक्षिण भारत से पंजाब की ओर चलें तो ढोल की आवाज सुनाई देती है। खेतों में खुशी से भांगड़ा नाचते लोग दिखाई देते हैं। ढोल और उन लोगों के सुरों को सुनकर गदराई फसल झूमने लगती है। 'बैसाखी' भी फसल कटाई का बड़ा त्योहार है। बैसाखी की दावत में मक्का की रोटी और सरसों का साग चखकर लोग 'बल्ले–बल्ले' कह उठते हैं।

इसी मौसम में असम के ढोल सुनाई देते हैं। वहाँ असमी नववर्ष शुरू हो जाता है। धान बोने के लिए किसान खेतों की तैयारी करते हैं सभी लोग रंगोली 'बिहू' का त्योहार मनाते हैं। बिहू के गीत गाते और नृत्य करते हुए वे घर–घर जाकर अच्छी फसल की कामना के गीत गाते हैं। महिलाएँ बिहू के अवसर पर विशेष रूप से चावल और नारियल का 'पीठा' और 'लारस' बनाती हैं।

राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश और हरियाणा में सावन के महीने में जब वर्षा की फुहारें पड़ती हैं तो बहू–बेटियाँ झूलों पर झलती हैं। वे घेवर व अन्य मिठाइयों का आनंद उठाती है। भाई अपनी बहनों के लिए घेवर की सौगात ले जाते हैं। शिवरात्रि हो या जन्माष्टमी या फिर नवरात्रि का त्योहार। इनमें भी फसलों की कंद–मूलों से बनता है फलाहार।

– खरोरा (छत्तीसगढ़)

छः अँगुल मुस्कान

शिक्षक – चाँद पर पहला कदम किसने रखा था?

बंटी – जी! नील आर्मस्ट्रॉंग।

शिक्षक – ठीक! और दूसरा?

बंटी – दूसरा भी उसने ही रखा होगा सर! एक कदम चलकर वह वापस थोड़े ही आ गया होगा।

*****

बेटा – पिताजी 'आई डोंट नो' का क्या अर्थ मतलब है?

पिताजी – मैं नहीं जानता।

बेटा – फिर आप अँग्रेजी भाषा के टीचर कैसे बन गए?

*****

एक आदमी ने बच्चे से पूछा – बेटे! आप अपना तथा अपने पापा का नाम बताओ।

बच्चा – मेरा नाम श्याम कुमार और पापा का नाम पापा है।

वह आदमी बोला – जैसे आप का नाम श्याम कुमार है वैसे आप अपने पापा का नाम बताओ।

बच्चा बोला – अंकल! अभी उनका नाम नहीं रखा गया है, बस प्यार से पापा–पापा कहा जाता है।

*****

जज – तुमने चोरी करते समय अपने बच्चों के भविष्य के बारे में नहीं सोचा?

अपराधी– उनके भविष्य के बारे में सोचकर ही तो उस दुकान में घुसा था श्रीमान्! पर वहाँ बच्चों की स्कूल ड्रेस थी ही नहीं।

बालसाहित्य की बगिया के माली थे रामेश्वर दयाल दुबे

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

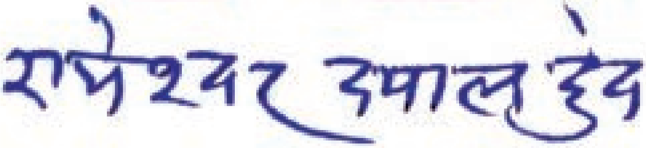

रामेश्वर दयाल दुबे हिंदी भाषा के समर्पित प्रचारक थे। उन्होंने मूल्यपरक और सुबोध बाल साहित्य के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय अवदान दिया।

रामेश्वर दयाल दुबे का जन्म २१ जून १९०९ को जिला मैनपुरी के हिन्दूपुर ग्राम में हुआ। पिता श्री. देवीदयाल दुबे और माँ का नाम अधानी था। गाँव में शिक्षा की समुचित व्यवस्था न होने के कारण उन्हें कक्षा चार के बाद अपनी बुआ के यहाँ छिबरामऊ जिला फर्रुखाबाद में रहकर पढ़ाई करनी पड़ी, तत्पश्चात् उन्होंने दिल्ली से बी. ए. और आगरा से हिंदी विषय में एम. ए. की शिक्षा प्राप्त की।

वर्ष १९३५ में उन्होंने बाल साहित्य लिखना प्रारम्भ किया था। १९३७ में वे राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन की प्रेरणा से वर्धा चले गए। ४० वर्ष तक लगातार अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार किया।

उनके द्वारा बच्चों के लिए लिखने की शुरुआत के पीछे तो एक मजेदार कहानी है। उनके भांजे का यज्ञोपवीत संस्कार था। बूँदी के लड्डू बन रहे थे, जिन्हें देख बच्चों के मुँह में पानी आ रहा था। बस, बच्चों से बतियाते हुए, उनकी एक मजेदार कविता तैयार हो गई; **जय मेरे लड्डू भगवान। सूरज लड्डू, चन्दा लड्डू, गोल-गोल दुनिया भी लड्डू। गोल-गोल तुम गेंद समान। जय मेरे लड्डू भगवान।**

मराठी में एक कथन है बाल माझे देव अर्थात् बालक मेरा देवता है। दुबे जी ने उसका अक्षरश: पालन करते हुए आजीवन बालरूपी देवता की आराधना की। बालकों के लिए सहज और अवस्थानुरूप साहित्य की आवश्यकता को समझते हुए उन्होंने प्रचुर मात्रा में लेखन किया। उन्होंने जीवन मूल्यों से जुड़ी उत्कृष्ट कविताएँ और लघु नाटिकाएँ लिखीं। बच्चों के लिए उनकी उल्लेखनीय पुस्तकें हैं- अभिलाषी, भारत के लाल, चले चलो, डाल-डाल के पंछी, धरती के लाल, बगुला सफेद क्यों?, माँ यह कौन?, बड़े जब छोटे थे, कुकडू कूं, फूल और काँटे, डंडा और बाँसुरी, क्या यह सुनी कहानी?, घूम-घूम कर देखें देश, आओ देखें अपना देश, उत्तर प्रदेश-उत्तम प्रदेश, लोककथा, पहेलियाँ, सौ बोध कथाएँ, इनकी भी सुन लो, राम कथा इत्यादि।

दुबे जी की स्पष्ट मान्यता थी कि सफल बाल साहित्य वही लिख सकता है, जो बालकों की तरह सोचने देखने और उन्हीं की तरह संवाद करने की क्षमता रखता है।

दुबे जी का जीवन अत्यंत अनुशासित था। १०२ वर्ष की अवस्था में भी वे पत्रों के उत्तर देते थे। सुबह घूमने और बागवानी करने का शौक उन्हें जीवन

भर रहा। वे कहते थे– ''आँगन के फूल बच्चे हैं और उपवन के बच्चे फूल।'' उन्होंने अपनी बगिया में एक तख्ती भी टाँग रखी थी जिस पर लिखा था– **''फूल बना है दूल्हा देखो, पत्ते बने बराती। इसे उतारो नहीं, डाल की इसे पालकी भाती।''**

२४ जनवरी २०११ को लखनऊ में उनका निधन हो गया। वे अपने सृजन के माध्यम से अमर हैं। **'भारत जननी एक हृदय हो। एक राष्ट्रभाषा हिन्दी में कोटि-कोटि जनता की जय हो।'** उनका प्रसिद्ध गीत है जो आज भी केन्द्रीय हिंदी संस्थान के कुलगीत के रूप में स्वीकार्य है।

आइए, उनकी कुछ बालोपयोगी रचनाएँ पढ़ते हैं–

हास्य कविता

सच्चा भाई मेरा

चरते चरते चला गया था–
कहीं गधे का बच्चा।
जो सुन्दर था, जो चंचल था
और बहुत ही अच्छा।।
खोजा बहुत, नहीं ही पाया,
गदहा दुखी बिचारा।
एक दिवस बच्चा पाने का,
मिल ही गया सहारा।।
गली बीच जा रहा गधा था,
पास सेठ का घर था।
कोई बोल उठा भीतर से
क्रोध भरा ही स्वर था।।
उसने सुना 'गधे के बच्चे,
स्याही क्यों फैलाई?
तेरे कान ऐंठता हूँ मैं,
तेरी शामत आई।।
खड़ा हो गया गधा वहीं पर,
ढेंचू-ढेंचू बोला।
सुन आवाज सेठ ने अपना
दरवाजा था खोला।।
बोला गधा, ''आदमी होकर,
भला तुझे क्या भाया?
मेरे बच्चे को तो तूने,

घर के बीच छिपाया।।
कहा सेठ ने कैसा बच्चा?
यह बच्चा है मेरा।
मैंने उसको गाली दी थी,
क्या मतलब है तेरा?
कहा गधे ने – 'यदि सचमुच ही,
गदहा बच्चा तेरा।
तब तो तू भी अरे! गधा है,
सच्चा भाई मेरा।।

नाम बताओ

मैं उठता हूँ, वह उठती है,
मैं चलता, वह चलती।
मैं दौड़ूँ तो साथ दौड़ती,
सदा साथ ही रहती।।
पकड़ूँ तो मैं पकड़ न पाऊँ,
अजब खेल है उसका।
हाथ न आए, साथ न छोड़े,
वह स्वभाव है किसका?
जल्दी से तुम नाम बताओ,
नहीं समझ में आया?
मैं ही तुम्हें बता देता हूँ,
वह है मेरी छाया।।

बूझ–बुझव्वल

१)
खाना खाती नहीं,
सिर्फ पीती हूँ पानी।
पेट बड़ा, मुँह छोटा,
मेरी यही कहानी।।
२)
बड़ा अनोखा,
तीन हाथ हैं,
बिना पैर के
नाचा करता।
३)
मुँह खोले ही लेटे रहते,
मुँह भर जाता तो चल देते।
चलते–चलते सेवा करते,
नहीं एक भी पैसा लेते।।
उत्तर– १) सुराही। २) पंखा। ३) जूते।

सबकी बोली

म्याऊँ–म्याऊँ बिल्ली करती,
कुत्ता भौं–भौं करता।
ढेचूँ–ढेचूँ गदहा करता,
बन्दर खो–खो करता।।
घोड़ा करता हिन–हिन, हिन–हिन,
गायें बॉ–बॉ करती।
भेड़ें बें बें करतीं।
सबकी बोली अच्छी लगती,
मगर न उतनी न्यारी।
जितनी मीठी मुझको लगती,
माँ की बोली प्यारी।।

सुई धागा

पात्र– तीन बच्चे जो सुई, धागा और कैंची की भूमिका निभाएँगे।

धागा– (मंच पर घूम–घूम कर गाता है।)

मैं धागा हूँ, मैं कोमल हूँ। मैं लम्बा हूँ मैं निर्मल हूँ। मैं धागा हूँ, मैं कोमल हूँ। (सुई का प्रवेश)

सुई– भैया धागे!

धागा– दूर दूर! तुम सुई हो न? पास मत आना। तुम्हारी नोक बड़ी भयानक है।

सुई– बहन से इतना डरता है?

धागा– न भाई! मैं ऐसी बहन को दूर से प्रणाम करता हूँ। कहाँ मैं, कहाँ तुम! मैं धागा हूँ। कितना कोमल कितना निर्मल। गाँधी जी का प्यारा हूँ। तुम कितनी कठोर, कितनी नुकीली?

सुई– मैं मानती हूँ तू कोमल है, लम्बा है। गाँधी जी तुझे चरखे पर कातते थे। पर मुझे बुरा क्यों समझता है? यदि मैं संसार में न होती, तो कपड़े कैसे सिए जाते? पैरों में लगे हुए काँटों को कौन निकालता?

धागा– ठहरो, ठहरो! अपने मुँह अपनी प्रशंसा करना अच्छा नहीं। छेद–छेद कर तुम सबको दुःख दिया करती हो तुम इतनी छोटी हो कि जमीन पर गिर जाने पर, खोजने पर भी नहीं मिलती। और मैं? लोगों की भलाई करने वाला हूँ। जब मेरे साथी क्रम से इकट्ठे हो जाते हैं, तो उससे कपड़ा बन जाता है। लोग उसका उपयोग कर सुख पाते हैं। झंडे में हम ही तो आसमान में लहराते हैं।

सुई–भैया धागे! तू अच्छा है, पर दूसरे को बुरा समझना अच्छा नहीं। किसी को बुरा मत कहा कर।

धागा– किसी को कहाँ मैं कुछ कहता हूँ। मैं तो तुमसे कह रहा हूँ कि तुम काँटा हो, नुकीली हो, खराब हो।

सुई– तू चुप नहीं रहेगा?

धागा– नहीं रहूँगा। तुम काँटा हो, नुकीली हो, खराब हो, बुरी हो।

(कैंची का प्रवेश)

कैंची–क्यों धागे? इतना शोर क्यों मचाता है? (सुई से) क्यों सुई? क्या बात है?

सुई– इसी से पूछो, दीदी!

कैंची– धागे! बोलता क्यों नहीं? क्यों शोर मचा रहा था। अभी तुझे ठीक करती हूँ।

धागा– (सुई से) सुई दीदी! (काँपती बोली में) सुई दीदी! मुझे बचाओ। मैं कैंची दीदी से बहुत डरता हूँ।

सुई– (कैंची से) बड़ी दीदी! कोई बात नहीं धागा मुझसे यों ही खेल रहा था। उसको क्षमा करो। मैं उसे संभाल लूँगी।

कैंची– अच्छा धागे! मैं जाती हूँ। अब शोर नहीं मचाना। (कैंची का प्रस्थान)

धागा– सुई दीदी! तुम बहुत अच्छी हो। मैं तुम्हारा छोटा भैया हूँ। तुम मेरी दीदी हो न!

सुई– हूँ, बस एक डाँट में तेरी अकल ठिकाने आ गई। अब छोटा भैया, बाल कन्हैया बन गया। तू बड़ा नटखट है, चंचल है। अच्छा इधर आ! तुझे गले लगा लूँ। अच्छा, मैं अब आगे–आगे चलती हूँ।

धागा– मैं पीछे–पीछे आता हूँ।

सुई– मैं राह बनाती चलती हूँ।

धागा– मैं उस पर बढ़ता आता हूँ।

सुई– जो दूर–दूर, मैं उन्हें निकट में लाती हूँ।

धागा– मैं उन्हें जोड़ता आता हूँ।

सुई धागा– (दोनों मिलकर गाते हैं)–

जहाँ मेल है, वहाँ भलाई।
जहाँ लड़ाई, वहाँ बुराई।
जहाँ मेल है, वहाँ भलाई।
जहाँ लड़ाई, वहाँ बुराई।

(धीरे–धीरे पर्दा गिरता है।)

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

पिताजी की गलती

– अन्वि शंकर गुप्ता

एक दिन गौरव विद्यालय जाने की तैयारी कर रहा था। जब वह शर्ट पहन रहा था, उसके पिताजी की दृष्टि पड़ी। उन्होंने देखा कि शर्ट गंदी है। पिताजी ने पूछा कि– ''तुम गंदी शर्ट क्यों पहन रहे हो ?'' तो गौरव ने कहा कि– ''मेरे पास गणवेश (यूनिफॉर्म) की यही एक शर्ट है।'' पिताजी बोले– ''लेकिन मैं तो हर दिन तुम्हारी शर्ट धोकर प्रेस कर देता हूँ।'' गौरव बोला– ''फिर बताइए कि ये गंदी क्यों है ?'' अचानक पिताजी को स्मरण हो आया कि काम के चक्कर में कल वे शर्ट धोना ही भूल गए थे और आज सुबह भी उन्हें याद नहीं आया।

उन्होंने सोचा कि गंदी शर्ट के कारण विद्यालय में बच्चे को डाँट पड़ेगी। वे बोले– ''तुम्हारे विद्यालय की बस आने में अभी समय है, तब तक मैं फटाफट धोकर प्रेस कर देता हूँ।'' वे जल्दी–जल्दी शर्ट धोकर लाए और प्रेस करने लगे, तब तक बस का हॉर्न बजने लगा। गौरव जल्दी से तैयार होकर बाहर पहुँचा, लेकिन बस निकल चुकी थी।

वह उदास होकर वापस घर के अंदर चला गया। उसका लटका मुँह देखकर पिताजी समझ गए। उन्होंने कहा कि– ''तुम्हें जल्दी से तैयार होना था।'' गौरव ने चिल्लाकर उत्तर दिया– ''पिताजी! आप मुझे क्यों डाँट रहे हैं। गलती आपकी थी। आप ही शर्ट धोना भूल गए थे।''

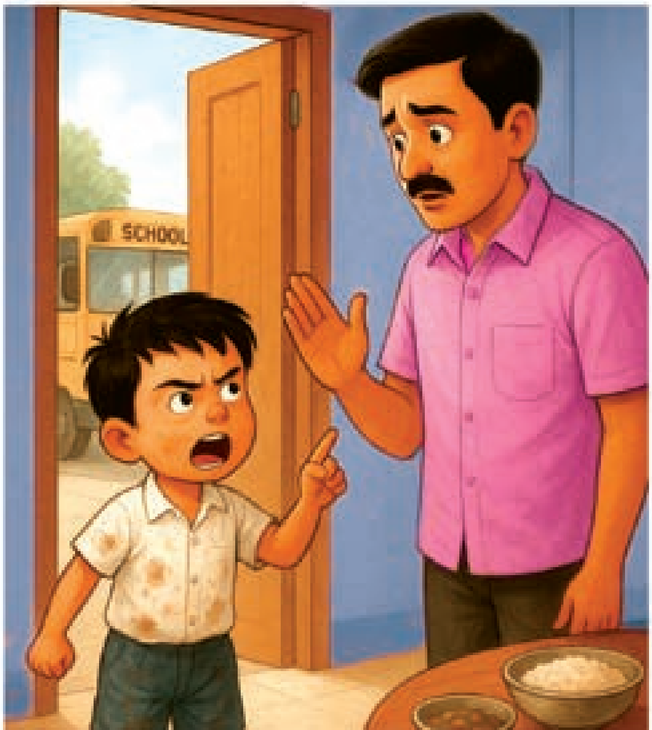

पिताजी ने कुछ सोचकर कहा– ''ठीक है, चलो मैं तुम्हें अपने स्कूटर से विद्यालय छोड़ देता हूँ।''

विद्यालय में गौरव को देर से आने के लिए डाँट पड़ी। सारे दिन वह पढ़ाई में जबरदस्ती मन लगाने का प्रयत्न करता रहा। उसे रह–रहकर पिताजी पर गुस्सा आ रहा था कि वे शर्ट धोना क्यों भूल गए। जब वह घर लौटा, तो एकदम पस्त हो चुका था। उसे गणवेश उताकर घर के कपड़े पहनने का मन भी नहीं हो रहा था। वह वैसे ही सोफे पर लेट गया।

अभी पिताजी कार्यालय से नहीं आए थे। वे सुबह ही बगल वाले घर में चाबी दे गए थे। कल उन्होंने गौरव को बताया था कि कार्यालय में काम अधिक है, इसलिए उन्हें अधिक समय तक कार्य करना पड़ेगा। लेटे–लेटे गौरव को विचार आया कि पिताजी को कितना काम करना पड़ता है। अभी माँ हॉस्पिटल में हैं, इसलिए पिताजी सुबह उठकर नाश्ता–भोजन सब तैयार करते हैं, फिर माँ के पास हॉस्पिटल जाते हैं और उसके बाद अपने कार्यालय। वहाँ से लौटकर घर के सारे काम करके, भोजन आदि बनाकर फिर उसे माँ के पास हॉस्पिटल ले जाते हैं। वहाँ से लौटने के बाद उसे गृहकार्य भी कराते हैं। फिर कल की तैयारियाँ करके सोते हैं।

यह सब सोचते हुए गौरव को बड़ा दु:ख हो रहा था कि सुबह उसने एक छोटी–सी बात के लिए चीख–चिल्लाहट मचा दी। इतने में घंटी बजी। गौरव को पिताजी की आवाज आई, वे उसे दरवाजा खोलने के लिए कह रहे थे। भीतर आकर पिताजी कहने लगे– ''आज तो देर हो गई। मैं फटाफट काम निपटाता हूँ, फिर हम हॉस्पिटल चलेंगे।''

उनकी बात सुनकर गौरव ने कुछ नहीं कहा, बस उनसे लिपटकर रोने लगा। पिताजी प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरने लगे।

– भोपाल (म. प्र.)

लेने के देने!
चित्रकथा : देवांशु वत्स
दिवाली के दिन
बबलू, राम ने अपने पटाखे सूखने के लिए धप में डाले हैं।
हाँ!
ये तो खूब सारे हैं! चलो, अपने पटाखे रख कर उन्हें उठा लेते हैं!
फिर राम बाहर आया.....
बबलू ने पटाखे बदल लिए। खैर, ठीक ही हुआ!
रात में.....
पहले मेरे पटाखे की आवाज सुनो!
धड़ाम
ये तो कुछ भी नहीं! अपने कान बंद कर लेना!
फुस्स
अरे! यह क्या?
हा हा! मेरे पटाखे पानी में गिर गए थे और तुमने.....
चुपके से बदल लिए थे!
हाय!
हाय! पानी वाले पटाखे!

प्रसन्नता ईश्वर का वरदान

(गत अंक से आगे)

– डॉ. मनोहर भण्डारी

ठहाके लगाइए– दिनभर में कम से कम एक बार १० मिनिट तक ठहाके अवश्य लगाएँ। जब हँसते हैं तो ऑक्सीटोसिन नामक सहानुभूति और बंधन (Bonding) रसायन रक्त में प्रवेश करता है, जो सहसंबंध की भावना (Feelings of Relatedness) पैदा करता है। बीटा एंडोर्फिन भी निकलता है, जो खुशी की भावनाओं को ट्रिगर करता है। यह १५% अधिक दर्द सहन करने की शक्ति देता है। साथ ही इससे प्रतिरक्षा कार्यप्रणाली में सुधार, तनाव से राहत, ह्रदय स्वास्थ्य में सुधार, चिंता में कमी, सुरक्षा की भावना और मूड अच्छा हो जाता है। हँसने से तनाव हारमोन का स्तर कम हो जाता है। इम्यून सिस्टम (प्रतिरक्षा तंत्र) को सशक्त बनाने वाले सीरम इम्यूनोग्लोबिन ए और ई की मात्रा बढ़ती है, प्राकृतिक किलर सेल की गतिविधि भी बढ़ जाती है। साथ ही ह्यूमन ग्रोथ हारमोन की मात्रा भी बढ़ जाती है। **नॉर्मन कजिन्स** नामक एक वरिष्ठ पत्रकार को हास्य के कारण अपनी एंकिलॉजिंग स्पांडिलाइटिस के लक्षणों तथा दर्द में उल्लेखनीय सुधार हुआ और फिर उन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर **एनाटामी ऑफ एन इलनेस** नामक पुस्तक लिखी, जिसमें हास्य और हँसी के उपचारात्मक लाभों का उल्लेख है।

सामाजिकता और मित्रता अपनाएँ और स्वस्थ रहें– वैज्ञानिकों के अनुसार सामाजिकता और मित्रता से ह्रदय संबंधी रोगों, कुछ कैंसर, ऑस्टियोपोरोसिस, रयूमेटाइड आर्थराइटिस आदि रोगों में कमी आती है, अल्जाइमर्स रोग के खतरे में काफी कमी आ जाती है, रक्तचाप सामान्य होने लगता है, मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है, अवसाद से बचाव होता है।

कर्त्तव्य और दायित्व को बोझ नहीं मानें– कर्त्तव्य और दायित्व अथवा पढ़ाई को बोझ ना मानें। जिन व्यक्तियों का काम के नाम पर हमेशा मन खराब रहता है और तनाव के साथ काम करते हैं, उनके बारे में **डॉ. कार्ल मैनिन्जर** ने अपनी पुस्तक **मैन अगेंस्ट हिमसेल्फ** (अर्थात् व्यक्ति स्वयं के विरुद्ध) में लिखा है कि जो लोग अनमने मन से काम करते हैं, पढ़ाई करते हैं, वे तनाव, उदासी, जलन आदि से होने वाले गम्भीर रोगों की चपेट में आ सकते हैं। **डॉ. जोसेफ एफ. मान्टेग** का कहना है कि जहाँ भी व्यक्ति काम करता है, उससे उपेक्षा की जाती है कि वह विवेक और समझबूझ से काम लेगा, परन्तु यदि वह काम को बोझ मानने लगे तो ऐसा नहीं कर सकता है। वह एकाग्रचित्त नहीं हो पाता और सबसे बड़ी बात यह है कि वह अन्तर्मन में यह जान रहा होता है कि वह ठीक से कार्य नहीं कर रहा है। उसके मन में अंतर्द्वंद्व शुरू हो जाता है। परिणामस्वरूप अन्त:स्रावी ग्रंथियों की प्रक्रिया गड़बड़ाने के कारण ह्रदय, रक्त वाहिनियों, आमाशय और आँतों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है।

(अगले अंक में आगे)

– इन्दौर (म. प्र.)

हम सकारात्मक परिवर्तनों के भगीरथ

– नारायण चौहान

(गतांक से आगे)

गत अंक में मैंने पंच संकल्पों में से तीन का उल्लेख किया था। शेष दो महत्वपूर्ण संकल्प हैं।

४) सामाजिक समरसता–

बच्चो! क्या तुमने इंद्रधनुष देखा है? उसके हर रंग की अपनी सुंदरता होती है, पर जब वे मिलते हैं, तब एक अद्भुत दृश्य बनता है। वैसे ही समाज के हर वर्ग– चाहे वह किसी जाति, धर्म, भाषा या क्षेत्र का हो– सब एकसाथ मिलकर ही भारत को महान बनाते हैं। इस राष्ट्र में धर्म भाषा या क्षेत्र भौगोलिकता इसके आधार पर जो विविधता है वह हमारी कमजोरी नहीं हमारी विशेषता है।

मेरे स्वयंसेवक शाखाओं में यह सिखाते हैं कि सब भाई–भाई हैं। हम सब एक–दूसरे का आदर करें, एक–दूसरे के पर्वों को मनाएँ और किसी को छोटा न समझें। यही है सामाजिक सरमसता– मिल–जुलकर चलना। मेरे स्वयंसेवक जब भी शिविर में या किसी कार्यक्रम में आते हैं तब उनके लिए भोजन बस्ती के अनेक परिवारों से आता है बिना भेदभाव के आता है। तब वह भोजन में परोसी गई रोटियाँ किसके घर की हैं किसकी थाली में किसके घर की रोटी परोसी गई हैं। यह पता नहीं चलता और यही बहुत ही आनंद के साथ सभी भोजन करते हैं कहने का अर्थ यह है कि हम भेदभाव रहित व्यवहार करते हैं।

५) कुटुंब प्रबोधन– परिवार ही राष्ट्र की जड़ है।

तुम्हारा घर ही तुम्हारी पहली पाठशाला है। वहाँ जो सिखाया जाता है, वही तुम्हारे जीवन का आधार बनता है।

मैं हर परिवार को जोड़ता हूँ। साथ में भोजन करना, बड़ों का आदर करना, अपने दादा–दादी से कहानियाँ सुनना– ये सब संस्कार कुटुंब से ही आते

हैं। मैं बालकों को उनके दादा–दादी, माता–पिता का सम्मान करना सिखाता हूँ। मैं उन्हें बताता हूँ कि एक साथ भोजन करना, बातचीत करना और अपनों का साथ देना ही सच्चा सुख है।

जब परिवार मजबूत होगा, तब देश भी मजबूत होगा।

जब हम बड़े परिवार में रहते हैं। सब के साथ रहने का अपना एक अनुभव होता है। बड़े परिवार में रहने का सहनशक्ति बढ़ाने का और एक दूसरे की आवश्यकताओं को पूर्ति करने का।

अंत में.....

बच्चो! मेरा सपना है एक सशक्त, संस्कारित, समरस भारत।

यदि आप इन पाँच संकल्पों को अपने जीवन में उतार सको, तो समझो मैं सफल हूँ... और आप भी।

बच्चो! अपने शताब्दी वर्ष के अवसर पर मैं पिछले पूरे वर्ष से आपको अपना थोड़ा–थोड़ा परिचय देता रहा हूँ। मुझे पूरी तरह जानना है तो आपको स्वयं मेरी शाखा पर आना होगा तब मैं धीरे–धीरे पूरी तरह आपको समझ आ जाऊँगा।

याद रखो,

''मैं संघ हूँ, तुमसे हूँ और तुम्हारे लिए ही हूँ।''

तुम्हारा सखा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

– इन्दौर (म. प्र.)

कोयल कब गाये ?

– सनत

''सुनो–सुनो! मेरी बात ध्यान से सुनो। सब कोई बताओ कि मुझे कब गाना है? शाम को या रात को? मैं ही सबसे अच्छे ऊँचे स्वर में गाती हूँ यह बात दुनिया को बता देना चाहती हूँ। मैं कोई ऐरी–गैरी चिड़िया थोड़ी हूँ। कवि मेरे बिना नाम लिए ऊँची कविता नहीं लिख सकता और गीतकार भी कोई मधुर गीत।'' गोयल ने बहुत उतावली में चिल्लाकर घोषणा की।

कोयल दूर यूरोप देश से इस क्षेत्र में आई हुई थी। बरसात के मौसम के बाद ठण्ड का मौसम था। जीव–जन्तुओं की कँपकँपी छूटती थी। झाड़ी–झुरमुट और पेड़ों पर ओस गिरती थी। पानी बर्फ की तरह ठिठुरता था। सूर्य को भी बादलों से ढँक जाना पड़ता था।

कोयल ने इधर देखा कि कई चिड़ा–चिड़िया ठण्ड की चिन्ता किए बिना सुबह–दुपहर मीठा गीत गाते हैं। कोई के–के गाता कोई क्रें–क्रें। कोई टें–टें गाता कोई टीं–टीं। कोई कुट–कुट गाता कोई टिट्–टिभिक–टिट् टिभिक। कोई सु ईट–सु ईट कोई चिरिक–चिरिक। कोई काँव–काँव तो कोई घुटुर–घुटुर। कोई पीऊ–पीऊ, पीहो–पीहो, लोरिओट–लोरिओट और हू पौपौ–हू–पौपौ गाता।

इन सुन्दर स्वरों को काली कोकिला ध्यान से सुनती थी। उसका मन भी गाने को करता था। वह भी मजे से खूब कू–कू गाना, गाना चाहती थी।

कोयल घूमने निकलती थी। हर पेड़ की डाल पर जा–जाकर बैठती थी। उसकी ऊँचाई से बाग–बगीचों और खेतों में कौआ, गौरैया, मैना, पँडकी, पपीहा, बुलबुल, तोता, कुररी, फुदकी, पतरिंगा, श्यामा, शमा, घ्याल, थ्रस, हमिंगबर्ड, नाइटिंगेल और राबिन उसे बहुत प्रसन्नता से गाते दिखते थे।

''अरी कुक्कू! ऐसा मत बोलो। तुम अपने मुँह से अपनी ही प्रशंसा मत करो। प्रशंसा दूसरे करें तब शोभा देता है। तुममें कई विशेषताएँ हो सकती हैं पर तुम्हीं में नहीं।'' जामुन का पेड़ बोला।

''गाने के मामले में शायद ही मेरे जितना दम किसी में हो। मैं गाने के लिए मरी जा रही हूँ। जल्दी बताओ मैं कब गाऊँ ?''

''अरी! फिर वही बात! तुम कब गाओगी तुम्हें हमारे बरगद दादा से पूछना चाहिए। यह देखो, मेरे आगे खड़े हैं।'' जामुन के पेड़ ने उत्तर दिया।

''मेरी ही तान बहुत सुरीली होती है। मेरे गाने के कारण ही धरती में हरियाली आती है। यदि मैं न गाऊँ तो ऋतु में बहार कोई नहीं ला सकेगा। बरगद दादा! तुम्हारा क्या कहना है ? बताओ मैं कब गाऊँ ? कोयल ने उनको देखकर पूछा।

''कोयल रानी! मैं यहाँ अढ़ाई–सौ वर्ष से खड़ा हूँ और देख रहा हूँ। तुम्हारी जैसी कितनी कोयल आईं और गईं। कितने मौसम, कितने चिड़ा–चिड़िया आए और गए। उनका घमण्ड चूर हो गया। प्रकृति की व्यवस्था तुम्हारे एक के कारण से नहीं बनती है। उसमें अन्य चिड़ा–चिड़ियों और पेड़ों का भी योगदान होता है। तुम सही समय पर अपना कंठ खोलना।

जब–तब गाने मत लग जाना। वरना लोग हँसेंगे कि इस कोयल को कुछ ज्ञात नहीं है। आम में बौर आए नहीं हैं न फला है और यह बेमौसम गा रही है। बाकी बातें यह आम का पेड़ बताएगा पूछो।'' बरगद दादा मुस्कुराते हुए बोले।

संयोग से आम का पेड़ भी वहीं पास में था। कोयल खिसियाकर बोली– ''ए आम! तुमसे मेरे पूर्वजों का रिश्ता है। तुम्हारा महत्व मेरे कारण ही तो बढ़ता है। तुम्हें मेरे पक्ष में बोलना पड़ेगा। बताओ मैं कब गाऊँ?''

''अरी कोयल! मैं तो निष्पक्ष बोलूँगा। जब मेरी डालों में खूब बौर आते हैं। भँवरे और तितलियाँ मंडराते हैं, तब वह बसन्त की ऋतु होती है। उसी समय से मेरी डालों पर लगातार बैठना। मजे से कुहकना और गाना। मेरा फलना जारी रहते धमक आएगा ग्रीष्म का मौसम। मेरे फल के बड़े होने और पकने का मौसम। तुम उन दिनों अपने कूकने में जोर लगाना। गुच्छों में लटके मेरे फल तेजी से पकेंगे। मीठे और गूदेदार फलों का स्वाद भी चखना।'' आम ने कहा।

''फिर मेरी विदाई कब होगी?''

''तुम आषाढ़–श्रावण मास के मध्य में विदा ले लेना। और सुनो, तुम एक बड़ी नामी चिड़िया हो। प्राचीन युग से साहित्य में वर्णित हो। बच्चे तुमसे मीठा बोलने की शिक्षा लेते हैं। कौआ और तुम रंग में एक समान हो। बस बोली का अन्तर है। नि:संदेह तुम्हारी गायकी अच्छी होती है। पर तुम्हें कभी इतनी शेखी बघारना नहीं चाहिए।'' आम के पेड़ ने कहा।

अब कोयल का चेहरा देखने लायक था। उसे अपनी गलतियों का अनुभव हुआ। वाकई उसका सोचना गलत है। उसने जामुन, बरगद दादा, आम और दूसरे पेड़ों से क्षमा माँगी। कब गाना उचित है इस बात को भी अच्छे से समझ गई।

– रायगढ़ (छत्तीसगढ़)

चंद्रपाल सिंह 'मयंक' रचनावली

बाल साहित्य की धरोहर है यह रचनावली

श्रद्धेय चन्द्रपालसिंह यादव 'मयंक' जी बालसाहित्य के उन अमर शिल्पियों में एक हैं जिनके सृजन कौशल से भारतीय हिन्दी बाल साहित्य का भव्य मंदिर आज गगन चूम रहा है। एक सितम्बर २०२५ को उनकी जन्मशताब्दी पूर्ण हुई। लेकिन उनका भौतिक शरीर हमसे २५ वर्ष पूर्व ही विदा ले चुका है।

साहित्यकार की यशोकाया ही अमर होती है उनके समग्र लेखन को चार खण्डों में एकत्र करने का सफल यत्न करके सर्वश्री डॉ. उषा यादव, राजकिशोर सिंह व काम सिंह ने 'चन्द्रपाल सिंह यादव 'मयंक' रचनावली' के रूप में प्रकाशित किया है।

नमन प्रकाशन– ४२३१/१, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–११०००२ से प्रकाशित ६०००/– मूल्यांकित इस रचनावली को बाल साहित्य के अध्येता एक चिरसंग्रहणीय धरोहर ग्रन्थ के रूप में स्वीकार करेंगे इसमें संशय नहीं। इसकी संपादक त्रयी को धन्यवाद।

हिम्मत मत हारो

– रजनीकांत शुक्ल

महाराष्ट्र के अमरावती जिले में अशोक थापा रहते हैं। उनके परिवार में कुल चार सदस्य थे। पति–पत्नी और उनकी दो बेटियाँ प्रिया और करीना। सिन्धी हिन्दी जूनियर कॉलेज की बारहवी कक्षा में आर्टस् की छात्रा थी। बच्चों के बड़े होने के साथ घर के खर्चों में वृद्धि होने लगी तो ऐसे में अशोक थापा की केयर टेकर का वेतन कम पड़ने लगा। एक दिन जब अशोक थापा ने अपने घर में बताया कि हमारी सोसायटी जय अंबा अपार्टमेंट के तीसरे माले पर रहने वाले परिवार को घर के काम के लिए किसी की तलाश है। काम कोई अधिक नहीं है किन्तु वे लोग पैसे अच्छे दे रहे हैं। अब करीना ने शाला की पढ़ाई के साथ इस काम को करके अपने परिवार की आर्थिक स्थिति में सहयोग करने की बात रखी।

पहले तो उसके माँ पिताजी ने मना किया कि तुम अपनी पढ़ाई पर ध्यान लगाओ। यह काम हम लोगों पर छोड़ दो लेकिन जब लोगों की माँग ने जोर पकड़ा और करीना की भी काम करने की इच्छा को उन्होंने देखा तो वे उसके माता–पिता इस बात के लिए राजी हो गए। अब शाला के समय से आगे पीछे के समय में करीना उसी जय अम्बे अपार्टमेंट के कुछ घरों में जाने लगी जिसमें उसके पिताजी केयर टेकर का काम करते थे। इस तरह उनके परिवार की गाड़ी पटरी पर दौड़ने लगी।

ऐसे में एक दिन एक ऐसी घटना घट गई जिसने करीना के जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया।

वह पन्द्रह मई २०२४ का दिन था। रोज के आम दिनों की भाँति उस दिन भी अशोक थापा उस सोसायटी के ग्राउण्ड पर अपनी ड्यूटी पर मुस्तैद थे। उसी समय उस सातमंजिला इमारत के तीसरे तल पर एक घर से अपना काम पूरा करके करीना थापा जब सीढ़ियों से उतरकर दूसरे तल पर आई तो उसने वहाँ काफी सारा धुआँ फैला देखा। इसमें उसे कुछ अजीब नहीं लगा उसने सोचा कि किसी ने कुछ जलाया होगा। उसका ही यह धुआँ निकल रहा था। उसने आगे बढ़कर उस फ्लैट की घंटी बजा दी। किन्तु उत्तर में उसे अंदर से कोई आवाज नहीं सुनाई दी। फिर उसने जोर से दरवाजे को पीट दिया किन्तु इस बार भी जब कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई तो उसका माथा ठनका। उसे याद आया कि इस समय तो उसे रोज ही यह दरवाजा बंद मिलता था।

इसका अर्थ है कि इस घर के लोग ताला बंद करके बाहर गए हैं। और अंदर किसी कारण से आग लग गई है। उसने लिफ्ट के उस तल पर आने की प्रतीक्षा नहीं की और सीढ़ियों से दौड़ती हुई ग्राउंड फ्लोर पर ड्यूटी कर रहे अपने पिताजी के पास हाँफती हुई पहुँची। उसने पिताजी को बताया कि जल्दी ऊपर चलो। द्वितीय तल के एक फ्लेट के अन्दर आग लगी है और बाहर से ताला बंद करके घर

के लोग कहीं गए हुए हैं। अशोक थापा बिना देर किए हुए करीना के साथ सीढ़ियाँ चढ़ते हुए सेकेन्ड फ्लोर पर पहुँचे तो उन्होंने करीना का कहा हुआ सच पाया। धुएँ की मात्रा बढ़ती देख उन्हें लग रहा था कि अंदर अवश्य कुछ ऐसा हो रहा है जिसे यदि नहीं रोका गया तो कोई बड़ी दुर्घटना हो सकती है।

अशोक थापा ने तुरन्त उस फ्लेट के मालिक को फोन करके इस घटना की सूचना दी। इस समाचार को सुनकर उस फ्लेट के मालिक भी घबरा गए और उन्होंने तुरन्त अपनी पत्नी मीना को चाबी लेकर फ्लेट पर पहुँचने के लिए कहा। मीना अपने बेटे को ट्यूशन से लेने गई थीं। उन्हें आने में कितना समय लगेगा पता नहीं था। तब तक हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठा जा सकता था।

अशोक थापा और करीना ने इस बीच दरवाजे को किसी तरह खोलने और तोड़ने का प्रयत्न किया किन्तु वे ऐसा कर पाने में सफल न हो सके।

ऐसे में बस प्रतीक्षा करना ही एक विकल्प बचता था। अन्दर से आने वाले धुएँ की बढ़ती मात्रा पल-पल बढ़ते खतरे की आशंका को बढ़ाती जा रही थी। इस बीच चाबी लेकर फ्लेट की मालकिन मीना आ गईं। किन्तु उनकी ऐसी हालत देखकर दरवाजा खोलने और घर में घुसने की हिम्मत नहीं हुई। उन्होंने चाबी करीना को सौंप दी और उससे दरवाजा खोलकर अन्दर की स्थिति को देखने का अनुरोध किया।

करीना ने जल्दी से दरवाजे के ताले में चाबी घुमाई और दरवाजा खोलकर अन्दर घुसने का प्रयास किया।

दरवाजा खुलते ही घने धुएँ का गुबार बाहर की ओर आया और उसने अन्दर घुसने का प्रयास करने वाली करीना थापा की साँसों पर कब्जा जमा लिया। परिणाम यह हुआ कि करीना खाँसती हुई उल्टे पैरों वापस बाहर आ गई। लेकिन इस बीच उसे इस बात का भी अनुमान हो गया कि आग के कारण अन्दर फ्लेट का पूरा वातावरण और उसका नीचे का फर्श गरम तवे की तरह तप रहा था।

अब अन्दर जाए बिना उसकी स्थिति में कैसे सुधार लाया जाए। यह समस्या थी। इसे देखते हुए बगल के फ्लेट के ताले को तोड़कर उसकी बालकनी में जाकर वहाँ से अन्दर पानी डालकर स्थिति पर नियंत्रण की बात सोची गई। फिर आपात स्थिति में यही किया गया। बगल के फ्लेट के मालिक उसमें ताला डालकर अपने गाँव गए हुए थे। उनसे पूछने का समय नहीं था। स्थिति पल-पल भयंकर होती जा रही थी। जल्दी ही लोहे की सरिया डालकर ताला तोड़ा गया और करीना ने बालकनी में जाकर खिड़की से अन्दर पानी डाला। किन्तु वह पानी ऊँट के मुँह में जीरे की तरह था।

बिना फ्लेट के अन्दर जाए बात नहीं बनेगी। करीना ने सोचा।

आग और धुएँ से बचने के लिए उसने मुँह पर गीला कपड़ा बाँधा पैरों में चप्पल ही थी पानी से भरी बाल्टी लेकर वह खिड़की के रास्ते अन्दर कूद गई

ताकि आग के स्रोत को समाप्त कर सके। उसने देखा कि रसोई में रखे सिलेंडर से निकलने वाली गैस से आग फैल रही है। उसने सिलेंडर पर पानी डालने के लिए आगे कदम बढ़ाना चाहा किन्तु यह क्या उसके पैरों ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया था। उसने नीचे देखा कि गरम फर्श पर उसकी प्लॉस्टिक की चप्पल चिपक चुकी थी। अब उसने सावधानीपूर्वक पैरों को जोर लगाकर उठाया और बाल्टी का पानी सिलेंडर के ऊपर उलट दिया।

खिड़की के पास दूसरे लोग पानी की बाल्टियाँ लिए तैयार खड़े थे उनसे बाल्टियाँ लेकर करीना ने सिलेंडर की उस आग को बिना डरे बुझाया। उस समय कुछ पता नहीं था कि इतनी देर से जल रहा वह सिलेंडर कब ब्लॉस्ट हो जाएगा। फिर उसने उस सिलेंडर को बाहर निकाला और इस तरह अपनी बहादुरी और हिम्मत से उसने उस परिसर में रहने वाले बहत्तर परिवारों के बीच होने वाली एक संभावित आपदा को टाल दिया।

जब यह समाचार संचार माध्यमों से लोगों तक पहुँचा तो करीना को प्रशासन द्वारा नगर का 'फायर ब्राण्ड एम्बेसडर' बनाया गया और उसका नाम प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के लिए भेजा गया।

देश की राष्ट्रपति महोदया द्रौपदी मुर्मू द्वारा वीर बाल दिवस २६ दिसम्बर २०२४ के अवसर पर करीना थापा को उसकी हिम्मत और बहादुरी के लिए राष्ट्रपति भवन में बच्चों को मिलने वाले इस सबसे बड़े पुरस्कार से सम्मानित किया।

इस पुरस्कार को पाने के दो दिन बाद ही करीना ने राष्ट्रीय प्रतियोगिता में पचास से पचपन किलोग्राम वर्ग में उन्नीस वर्ष से नीचे आयु वर्ग में किक बॉक्सिंग में स्वर्ण पदक जीतकर अमरावती को प्रसन्न होने का पुन: अवसर प्रदान किया।

नन्हें मित्रो!

आए अगर मुसीबत, तो तुम हिम्मत मत हारो।
आगे बढ़ो निडर होकर, उस संकट को टारो।।
दुनिया उसको देती आदर, जो बढ़ता आगे।
कौन पूछता भला उसे, जो ऐसे में भागे।।

– नई दिल्ली

कविता

दीपों की बारात

– डॉ. देशबन्धु शाहजहाँपुरी

आई है दीवाली लेकर,
खुशियों की सौगात।
कहीं बमों की धाँय–धाँय है,
करती नृत्य कहीं फिरकी।
कहीं सुर्र से उड़ते रॉकेट,
कहीं गोल घूमें चरखी।
आँगन बीच अनार कर रहा,
फूलों की बरसात।
कोई जगह नहीं खाली है,
जहाँ छिप सके अँधियारा।
जगमग ज्योति बिखेरा धरा पर,
रहा मुस्करा उजियारा।
ऐसा लगता निकल पड़ी है,
दीपों की बारात।

–शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

क्या गायब?

दूसरे चित्र में पहले की नकल करते समय बनाने से क्या रह गया है? बूझो.

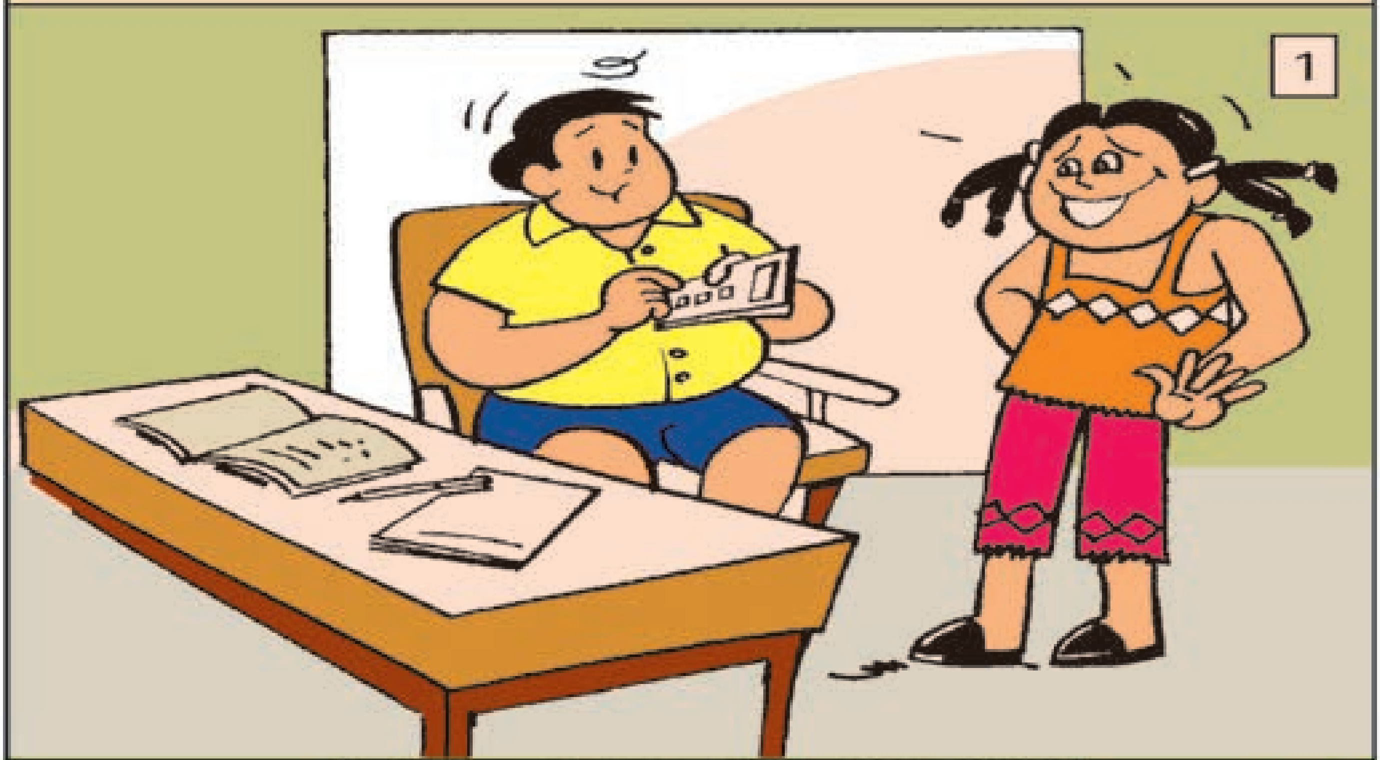

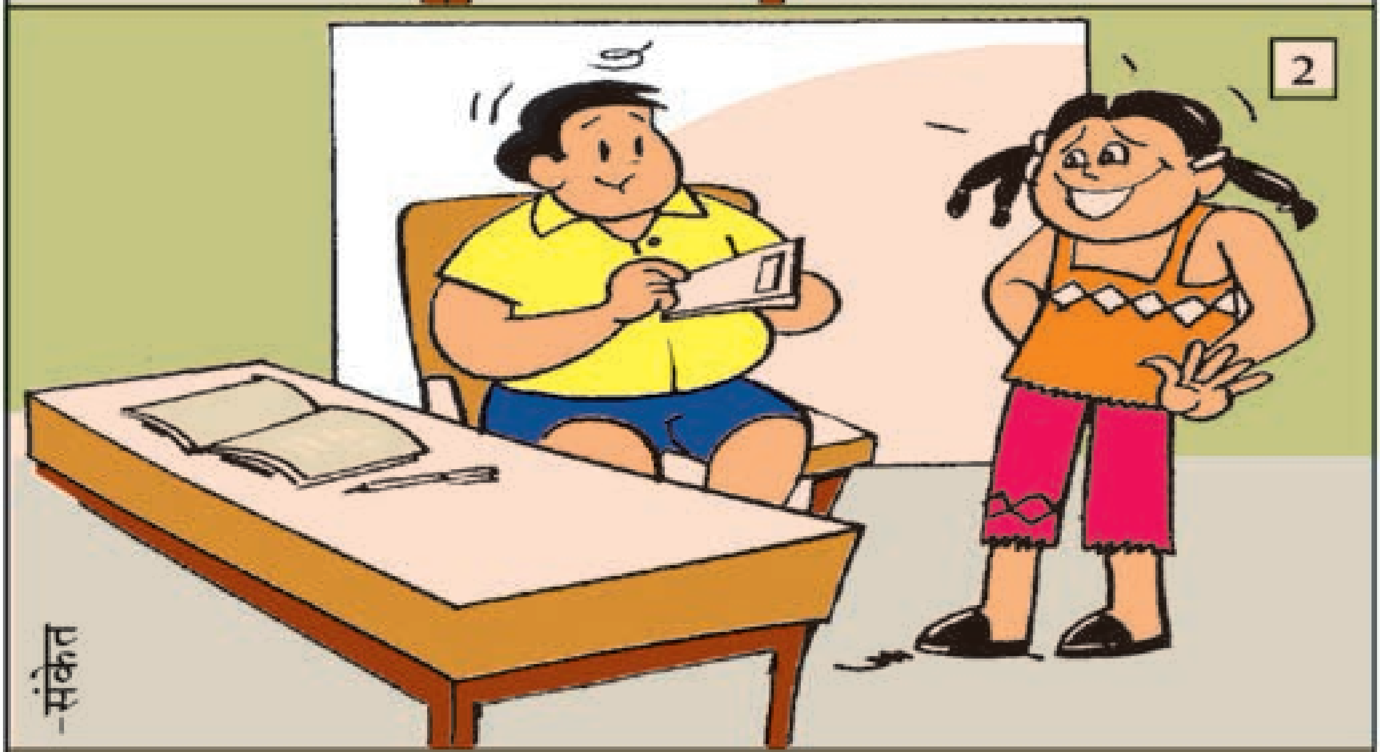

दूसरे चित्र में नहीं है- 1. मेज पर रखी किताब 2. कैलकुलेटर के बटन 3. लड़की की चोटी 4. पजामे पर डिजाइन 5. कुर्सी का हत्था 6. किताब पर लिखावट 7. लड़के का अंगूठा 8. शर्ट के बटन

बंटी और मनी

– डॉ. शील कौशिक

''कहो बंटू! आजादी पाकर कैसा लग रहा है?''

''मैं भी मजे में हूँ। ऐसा लग रहा है बस आसमान में उड़ती रहूँ।''

''एक बात कहूँ मनी! जब मैं पिंजरे में बंद था, तो कितना बेबस अनुभव करता था... अपने पंखों को निराशा में बस फड़फड़ाता रहता था। पिंजरे से बाहर आने के बाद एक बार तो मैं उड़ना ही भूल गया था। कई बार प्रयास करने पर ही उड़ पाया था। भला हो काकी के उस छोटे-से बेटे निक्कू का, जो मेरे लिए पिंजरे में सेब रखने आया था। सेब रखकर जल्दी में पिंजरे का दरवाजा बंद करना भूल गया और हम दोनों उड़कर निकल भागे।''

''हाँ! मैंने भी इस अवसर का लाभ उठाया था और झटपट पहले मुंडेर पर जा बैठी और फिर साथ लगते पेड़ की डाल पर। धीरे-धीरे मैं पंख खोलकर उड़ी और इस तरह यहाँ इस जंगल में पहुँच गई।''

बंटी तोता और मनी तोती अशोक वन में आपकर प्रसन्न थे। यहाँ बहुत सारे पशु-पक्षी थे। चारों ओर बड़े-बड़े छायादार वृक्ष थे। अगले दिन दोनों फुर्सत में फिर से पेड़ की डाल पर बैठकर बीते दिनों की याद करने लगे।

''एक बात है मनी! उमा काकी और उनका बेटा थे बहुत ही अच्छे! मुझे तो उनकी बहुत याद आ रही है।'' बंटी उदास स्वर में बोला।

''हाँ! तुम ठीक कहते हो। याद है तुम्हें, एक दिन उनके घर के साथ वाले उद्यान में एक कुत्ता मुझ पर झपट पड़ा था और मैं घायल हो गई थी। तब उमा काकी ने मुझे तड़पते देखा, तो मुझे अपने दुपट्टे में उठाकर तुरंत पक्षियों के डॉक्टर के पास ले गई थी। डॉक्टर ने मरहमपट्टी करके, मुझे पानी में दवा घोलकर देने के लिए कहा था। उनके बेटे ने ड्रॉपर से मुझे दिन में कई बार दवा पिलाई। उनकी दिन-रात की देखभाल से मैं कुछ दिनों में ही स्वस्थ हो गई थी।'' मनी भावविव्हल हो उठी।

''हाँ हाँ! मुझे सब स्मरण है। मैं भी तुमसे दूर कब गया था। उमा काकी के घर में तुम्हारे आसपास ही रहा था। तब काकी हम दोनों का स्नेह समझ गई थी। वह हम दोनों को नई-नई चीजें खिलाती थी। स्वयं खाने से पहले, वह हमें खिलाती थी। तब हमें उमा काकी का घर ही प्यारा लगने लगा था। हम उनसे दूर जाना ही नहीं चाहते थे।

हम दोनों अधिकांश बालकनी में ही रहते थे। उमा काकी व उनका बेटा हमारी पूरी देखभाल करते थे। समय पर खाना-पानी देने के साथ-साथ हमसे मीठी और प्यारी बातें भी करती थीं।''

बंटी के सामने उमा काकी का उदास चेहारा चित्रित हो उठा।

''याद है तुम्हें, एक दिन बालकनी में एक बिल्ली तुम पर झपट पड़ी थी बंटू। उमा काकी तुरंत दौड़ी आई और दूर से ही बिल्ली को चप्पल फेंक कर मारी थी। बिल्ली का ध्यान भटकने पर तुम्हारी जान बच गई थी। उसके बाद हम दोनों कितना डर गए थे। उमा काकी ने बिल्ली की खोटी नीयत को उस दिन भाँप लिया था। वह समझ गई कि इस तरह हम दोनों सुरक्षित नहीं हैं। वे रात को नींद से उठ-उठकर हमें सँभालती थीं। तब उनकी पड़ोसन ने सुझाया था कि इन दोनों को पिंजरे में ही रखना ठीक होगा। तुम इस तरह इन्हें कब तक बचा पाओगी। तब मजबूर होकर उमा काकी ने हमें पिंजरे में रखा था।''

''उमा काकी भी अकेली थी न। एक दिन वह अपनी पड़ोसन को अपने बारे में बता रही थी कि किस प्रकार उनके पति को हृदयघात (हार्ट अटेक) हुआ और वह उन्हें अकेला छोड़कर चल बसे। उमा काकी

के भाई बाहर दूसरे प्रदेशों में खा–कमा रहे थे, वर्ष में एक–दो बार आकर उन्हें संभालते थे। किन्तु वह और उनका बेटा बहुत उदास हो गए थे।''

''हाँ! यह बात तो थी, तभी तो वह हमसे दिन भर बतियाती रहती थी। मुझे प्यार से बंटी–बंटी बुलाती थी और सब चीजें मुझे देती थी। क्योंकि मैं हर चीज तुमसे बाँट–बाँटकर खाता था इसलिए वे सबसे पहले मुझे पकड़ाती थीं और तुम अपनी मनमानी करती थी इसलिए तुम्हें नहीं देती थी।

''और जब तुम टें–टें करके उनकी जान खाते थे, तो तुम्हें डाँट भी तो खूब पड़ती थी।'' बंटी की इस बात पर मनी कुछ नाराज हो गई थी। ''और हाँ! तुम्हें तो जैसे कभी डांट पड़ी ही नहीं। तुम हमेशा मेरे हिस्से के खाने पर झपटती थीं, तब उमा काकी तुम्हें डपटती थीं। कभी–कभी तो चपत भी दिखाती थीं। भूल गईं क्या?''

''हाँ! मुझे सब याद है, यह भी कि वह अपनी हथेली पर बिठाकर, दूसरे हाथ से मुझे ऐसे सहलाती थीं, जैसे अपने छोटे–से बेटे को सहला रही हों। वह रसोईघर या किसी भी कमरे में काम कर रही होती, किन्तु उनकी दृष्टि सदैव हमारे ऊपर होती थी।''

''सब याद आ रहा है मुझे! एक बात है मनी! हम इस तरह चुपचाप वहाँ से चले आए, उमा काकी और उनके बेटे पर क्या बीत रही होगी। वह हमारे बिना कितनी उदास रहती होंगी।''

''तुम ठीक कहते हो, उनके बेटे का रोता हुआ चेहरा बार–बार मेरे समक्ष आ रहा है। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए था। उन्हें अकेला छोड़कर नहीं आना चाहिए था। उमा काकी ने हमारी जान बचाई, हमारी देखभाल की, हमें प्यार से रखा और बदले में हमने क्या किया, केवल उन्हें दु:ख ही दिया। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए था।''

''तुम क्या कहती हो मनी?''

''तुम ठीक कहते हो बंटू! हमें केवल अपने स्वार्थ, अपनी खुशी के बारे में ही नहीं सोचना चाहिए।''

''चलो! फिर उमा काकी के पास लौट चलते हैं।''

दोनों ने एक साथ गर्दन घुमाई। बंटी और मनी चहकते हुए फिर से उमा काकी के घर की ओर उड़ चले।

– सिरसा (हरियाणा)

बाँहों में आकाश

हिन्दी अनुवाद – सौ. पद्मा चौगांवकर
मूल मराठी – स्व. मालती दांडेकर

''अम्मा! कब से मुंबई जाने का मन है, इन छुट्टियों में चला जाऊँ?'' हनुमंत ने पूछा तो देवकी के माथे पर बल पड़ गए।

''हनू! तू मुंबई जाने को बावला हुआ जाता है, अपने गाँव से तो बाहर कभी गया नहीं। हजार मेलों–जतराओं बराबर फैली–पसरी मुंबई!! जरा–सा तू और तेरी बड़ी जिद।'' अम्मा ने परेशान होकर कहा।

''अम्मा! दसवीं पास कर चुका, ग्यारहवीं की परीक्षा अभी अभी दी है, क्या छोटा हूँ? मामा कितनी बार बुलाता है, लिखता है, भेजो हनू को सारी मुंबई घुमाऊँगा।''

सच तो कहता है हनू पर देवकी डरी हुई है... हनू वहाँ गुम जाएगा, लौटकर नहीं आएगा! उसका बापू भी तो गया था, बाजीगरी के करतब दिखाने, रस्सी पर चलते हुए, ऊँचाई से गिरा और दुनिया से गया... तब से मुंबई के नाम से उसका जी काँपता है।

हनू ने सब सुन रखा था। उसे याद है, बापू गाँव–गाँव जाकर खेल–करतब दिखाता, तीन–तीन बाँसों की तिपाई से बँधी रस्सी पर सधी चाल से चलता, छोटा–सा हनू तब डफली–नगाड़ा बजाता कभी स्वयं भी एक हाथ में छोटा–सा छाता और दूसरे हाथ में रंगीन रूमाल लेकर डोर पर चलने के करतब दिखाता।

बापू ही तो उसे सिखाता 'हनू की अम्मा! देखना, कैसा तैयार करता हूँ इसे, एक छलांग में सूरज से जा भिड़ेगा।'

हनुमंत का जीवन–पुष्प, एक घुमक्कड़ जमात के बीच खिला था। खेल करतब दिखाते फिरना उनका शौक भी था और पेट पालने का माध्यम भी। हिम्मत मेहनत और साहस उनकी पूँजी थी।

पर बापू एकाएक गुजर गया।

इस घटना से देवकी बहुत ही डर गई। हनू इन खेलों के लिए हुनरमंद था। यह जानते हुए उसने इन बाजीगरी (डोंबारी) क्रिया–कलापों से उसे दूर रखने का निश्चय कर लिया था। सारे अभावों के बीच भी, उसने उसे पढ़ाने का मन बना लिया। घुमक्कड़ी छोड़ कोल्हापुर में एक कमरे के घर में रहकर, गुजारे के लिए, लोगों के यहाँ कुछ घरेलू काम करने लगी।

पर उसे कहाँ खबर थी, बापू जो काम करते थे, हनू को अभी भी उससे प्यार है। वह शाला के बाद व्यायामशाला जाता है। कुश्ती–कूद मलखम्ब – मुद्गर, डंड–बैठक सभी का अभ्यास करता है।

अब तो वहाँ के उस्ताद ने, रस्सी पर चलने के करतब सिखाने के लिए शाह जी उस्ताद को बुला लिया था। 'सितारा सर्कस' से सेवानिवृत्त शाहजी उस्ताद से नए–नए गुर सीखकर हनू जल्दी ही इस कला में माहिर हो गया। रस्सी पर उसकी चाल देखकर गुरु शाहजी वाह–वाह कर उठते।

और हनू का मन आशा के नए पंख लगाकर आकाश की सैर करने लगता।

दो वर्ष बीतते हनू ने अखाड़े के वार्षिक उत्सव में प्रथम पुरस्कार जीतकर नाम कमाया पर अपनी अम्मा को इस खुशी में कैसे शामिल करता? हाँ, चन्दूमामा को सब खबर थी।

आखिर हिम्मत जुटाकर उसने अम्मा को व्यायामशाला वाली बात बता दी। प्रथम पुरस्कार में मिला वह खूब बड़ा 'सुनहरा कप' भी दिखाया, अपना पहला पुरस्कार!

अम्मा ने कहा– ''रख उधर, तेरे बापू को भी

मिले ऐसे सैकड़ों पुरस्कार। तुझे भी वही धुन है।''

बापू के पुरस्कार तो उसने देखे हैं पर बापू के बारे में उसे कौन बताता? अम्मा तो, चुप ही रहती। चंदामामा से सब कुछ जान सकता था पर मुंबई जाना कैसे हो? अम्मा मुंबई के नाम से तो बिदकती है।

हनु उदास बैठा था कि 'मन चीती' एकाएक प्रभु चीती हो गई। चन्दूमामा की चिट्ठी आई– ''तारा कोल्हापुर आ रही है– देवी दर्शन को, उसी के साथ हनू को मुंबई भेज देना।''

अब अम्मा कैसे ना करती?

दूसरे दिन तारा माई आ पहुँची। मिठाई के डिब्बे का पेपर हटाकर हनू के लिए मिठाई निकाली। मिठाई खाते हुए हनू का ध्यान उस मुड़े–तुड़े पेपर कर गया। उसमें विज्ञापन छपा था। ओह! कितनी खास खबर थी, हनू के लिए! मुंबई समाचार का वह फटा अखबार, लपककर हनू नें अपनी जेब के हवाले किया।

कहीं अम्मा ने जान लिया तो, वह समाचार? गाड़ी में बैठते ही हनू ने जेब से वह अखबार निकाला और पढ़ने लगा।

'प्रो. मारुत राव के अद्‌भुत करतब! इस बार वो। बारह मंजिला इमारतों को जोड़ती–बंधी रस्सी पर चलने का, अनोखा–अनदेखा करतब दिखाएँगे। यह अवसर खोने का नहीं। अवश्य देखिए–हैरत अंगेज कारनामा।' हनू उमंग से भर उठा।

सच, यह अवसर चूकने का नहीं। मामा से कहकर वह अवश्य इस कार्यक्रम के टिकिट खरीदेगा मुंबई ट्रिप सार्थक हो जाएगी। पर उसके पास पैसे कितने कम है... सब कैसे होगा? वह विचारों में खोया था कि तारामाई की बात ने उसके विचारों का तार तोड़ दिया।

'अरे! हनू क्या उस फटे अखबार को पढ़े जा रहा है। स्टेशन आने वाला है, उतरना नहीं है?'

घर पहुँचकर उसने सबसे पहले कार्यक्रम

देखने की बात मामा से की।

उन्होंने उसे निराश नहीं किया। 'अच्छा तो मारुतराव के करतब देखना है? या स्वयं भी उस डोर पर चलना है? सुना है, बाप से बेटा सवाया हो गया है, एकदम माहिर, हनुमंत।'

हनू चौंक गया। ''सुना? आपने कहाँ सुना?''

''बस, हवा पर सवार यहाँ आती हैं सब खबरें।'' बच्चे, तुम्हारी व्यायामशाला के शाहजी हैं न, वो मेरे भी गुरु है। यहाँ आते रहते हैं... बस उन्हीं से।''

''मामा! वह बात छोड़िए, आप बताइए, हम जाएँगे ना कार्यक्रम देखने? कहाँ हैं, वह बारह मंजिला

इमारत ?'' ''हनू! वहाँ जाना कोई जरूरी नहीं।''

मामा की बात सुनकर हनू के हवाई किले पल में ढह गए। रूआँसा होकर बोला– ''मामा! टिकिट बहुत महँगा है क्या ? मेरे पास कुछ पैसे हैं।''

''पगले! मैं मजाक कर रह था।'' मामा ने दुलार लुटाते हुए कहा– ''तेरा मामा इतना कंजूस थोड़े ही है।''

''आ, इधर बाहर–सामने जो ऊँची बिल्डिंग, दिखाई दे रही है वही है बारह मंजिला 'फाइव स्टार होटल!' इसी के प्रचार के लिए यह कार्यक्रम रखा गया। बारहवीं मंजिल देखो, अंग्रेजी के 'सी' आकार की इस इमारत के दोनों सिरों से एक रस्सी बाँधी जाएगी जिस पर चलते हुए मारुतराव करतब दिखाएँगे। हम यहीं से यह दृश्य देख सकेंगे।''

हनू की आँखें 'आश्चर्य से फैल गईं।'

मामा बोले– ''बेटा! होटल का मालिक होटल के प्रचार के लिए यह सब कर रहा है– ललवानी मेरा परिचय है, मुझे 'पास' भी भेजा है। हर मंजिल के बरामदों में आमंत्रित लोग बैठेंगे– शो देखेंगे।''

''ओह! तब तो मजा आएगा। पर, मामा प्रोफेसर साहब कहाँ रुके हैं ? क्या आम लोग उनसे मिल सकते हैं ?'' हनू ने पूछा तो मामा बोले– ''वैसे तो नहीं, पर तुम्हारी इच्छा है तो चलो, प्रयत्न करते हैं।''

प्रोफेसर मारुतराव से मिलने दोनों उस बारह मंजिला इमारत की ओर चल पड़े हनू के जैसे पाँव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे... कैसा दुर्लभ अवसर मिला था उसे।

प्रोफेसर दोनों से स्नेह के साथ मिले। हनू के बारे में सबकुछ जानकर उन्होंने कहा–

''मिस्टर चंदर! इस बालक को मेरे पास छोड़ दो, मेरा सेक्रेटरी बनकर रहेगा। कल से मेरा स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं है। मुझे देखभाल की आवश्यकता है। बेटे हनुमंत! तुम्हें, फोन करना, पत्र लिखना आता है न ? अँग्रेजी आती होगी ?''

मारे खुशी के हनू के मुख से बोल न फूटते थे। मामा की आँखों में स्वीकृति देखकर, उसने धीरे से कहा– ''सब कुछ कर लूँगा साहेब!'' उसका गला भर आया था और आँखों में आँसू! जो कभी स्वप्न में नहीं देखा था सच हो रहा था।

उसने मारुतराव के सारे काम अच्छी तरह समझ लिए।

जब भोजन की थालियाँ आईं हनू ने जाना मारुतराव परहेज करते हैं आलू, चावल, घी आदि का। कारण पूछने पर उन्होंने हनू को बताया उन्हें हृदय विकार हो गया था।

हनू को आश्चर्य हुआ, ऐसी हालत में यह काम ? ''बच्चे शौक है, जीवनभर यहीं काम किया और फिर यह कार्यक्रम ललवानी ने दस महीने पहले एडवांस देकर पक्का किया था। जो मुझे करना ही होगा। अब स्वास्थ्य ठीक है, दवाएँ चल रही हैं।'' मारुतराव की बात को गंभीरता से समझते हुए हनू ने सारी दवाइयाँ अच्छी तरह जान–समझ लीं।

उधर कार्यक्रम की तैयारियाँ 'सी' आकार की उस इमारत पर चल रहीं थी। बारहवी मंजिल पर मोटी रस्सी कस दी गई थी। देखकर हनू सोच रहा था। 'ऐसी रस्सी पर मैं आराम से चल सकता हूँ।' कल प्रोफेसर साहब ने कितनी अच्छी बातें कहीं, अनमोल गुरुमंत्र! ''हनू! रस्सी पर चलने के लिए, करतब करने के लिए– शरीर संतुलन, चौकस नजर, सूर्य किरणों से आँखों को बचाना और सबसे बड़ी बात दृढ़ आत्मविश्वास बनाए रखना, ये बातें आवश्यक हैं।''

नीचे बैंड की धुन बज उठी, हनू की विचार शृंखला टूटी। प्रो मारुतराव कपड़े बदलने को उठे और एकाएक उनके सीने में दर्द हुआ कराहते हुए हनू को पुकारा– हनू को संकेत किया उसने दौड़कर उनकी बताई दवा उनकी जीभ के नीचे रख दी। उन्हें आराम से लिटाकर, डॉक्टर को फोन किया। उनकी

आँखों से आँसू छलक पड़े– ''अब शो नहीं हो सकता। मैंने एडवांस लिया है... बेइज्जती होगी। ललवानी को क्या मुँह दिखाऊँ।''

तब तक हनू ने कोई निश्चय कर लिया था। हनू ने उन्हें दिलासा दिया– ''साहेब! मैं यह काम कर लूँगा। मैंने शिक्षा भी ली है। आप जैसी कदकाठी है सब यही समझेंगे आप शो कर रहे हैं। आपके आशीर्वाद के साथ में रस्सी पर खेल जाऊँगा। बस, आप आराम करें। किसी को भी इस बात की खबर न हो।''

डॉ. आ पहुँचे। उपचार के बाद मारुतराव कुछ ठीक अनुभव कर रहे थे। उनके पास बैठकर, सहलाते हुए हनू ने कहा– ''साहेब! संकट की घड़ी टल गई है। आप शो की चिंता ना करें– मुझे अनुमति और आशीष दें। तनाव छोड़ आप पूर्ण विश्रांति लें। लो, मामा भी आ पहुँचे हैं, आपके पास रहेंगे।'' हनू ने जल्दी से शो की पोशाख पहनी।

मारुतराव ने स्नेह और कौतुक के साथ हनू की ओर देखा।

और प्रो. मारुतराव का रोमांचक कार्यक्रम शुरू हुआ। डोर पर संतुलित चाल। शान से चल रहे थे। 'मारुतराव हनू' हाथ में रंगीन झंडियों से सजा लम्बा बाँस, सधी चाल पर पाँव जमाना विलक्षण करतबगारी।

लोग धड़कते दिल से टकटकी लगाए देख रहे थे। 'वाह–वाह' कर रहे थे– मारुतराव के लिए और मारुतराव, मामा के साथ बालकनी से यह हैरतअंगेज कारनामा देख रहे थे। छोटा–सा बच्चा यह कमाल दिखलाएगा। किसने सोचा था? सब कुछ बेहद रोमांचक।

बीती बातों से मामा भयभीत था। पर मारुतराव आश्वस्त। ''चिंता मत करो नहीं गिरेगा– देखो, कितना आत्मविश्वास है उसमें– निर्भीकता, साहस और पक्का इरादा। देखो–देखो, अब पलटकर लौट रहा है वह सिकंदर।''

तालियों की गूँज सभी का उत्साह–वर्धन कर रही थी।

विजयी होकर लौटा हनू एक छलांग में मंजिल उसके कदमों में थी। बालकनी में दोनों के पैर छूकर उसने हाथ माथे से लगा लिए, जैसे जीत का सेहरा बाँध लिया।

प्रो. मारुत राव ने कहा– ''शाबाश बेटे! देखा मामा हनुमान ने एक छलांग में आसमान नापकर, सूर्य को निगला था। वैसा ही है, हमारा हनुमंता! इसका साहस देखो, मेरे लिए जान पर खेल गया। आज से यह मेरा शिष्य भी है और पुत्र भी।''

तब तक हनू कपड़े बदलकर लौटा। ''साहेब आपको अधिक बोलना–बात करना मना है। यदि ऐसा किया तो मुझे डॉक्टर को फोन करना पड़ेगा।''

हनू की बात पर सब हँस पड़े।

प्रोफेसर साहब ने हनुमंत को ५०० रुपये और कसरत की वह सुन्दर पोशाख भेंट में दी।

मामा–भांजे कोल्हापुर लौटे। मामा ने बड़े ही कौतुक के साथ सब कुछ बताया– सब कुछ सुनकर अम्मा के दिल में दहशत थी वहीं दूसरी ओर खुशी की तरंग भी। आँखों में आँसू भरकर हनू को हृदय से लगाकर वह आशीष दे रही थी। दोनों मन ही मन हनू के बापू–सूर्याजी को याद कर रहे थे।

– विदिशा (म. प्र.)

❊ सुभाषित ❊

साहस से संभावना,
सौ गुन करे विकास।
साहस गुण सिरमोर है,
बढ़े आत्म विश्वास।।

INTO
YOUR
LIFE
SURYA
रिश्तों की ज़िंदगी में रोशनी फैलाता–आपका अपना सूर्या।
सूर्या रोशनी – सिर्फ रोशनी नहीं, भरोसे का नाम है। एक ऐसा भरोसा जो रिश्तों में प्यार की रोशनी भरता है। बात रोज़ की ज़रूरतों की हो या आपकी सुरक्षा की, हमारी कोशिश रही है कि हम – हमेशा आपको कुछ नया दें, और आपके इस भरोसे को और भी मज़बूत बनाएं।
आइए मिलकर इन सुंदर पलों को और भी ज्यादा रोशन करें एवं विकसित भारत की ओर तेज़ी से कदम बढ़ाएँ।
Consumer Lighting | Steel & PVC Pipes | Fans | Appliances | Professional Lighting
I am SURYA | 50
SURYA ROSHNI LIMITED | www.surya.co.in | surya surya_roshni surya.roshni surya-roshni
Email: info@surya.in Tel.: +91-11-47108000

रोबोट्स की दीवाली

– प्राजक्ता देशपाण्डे

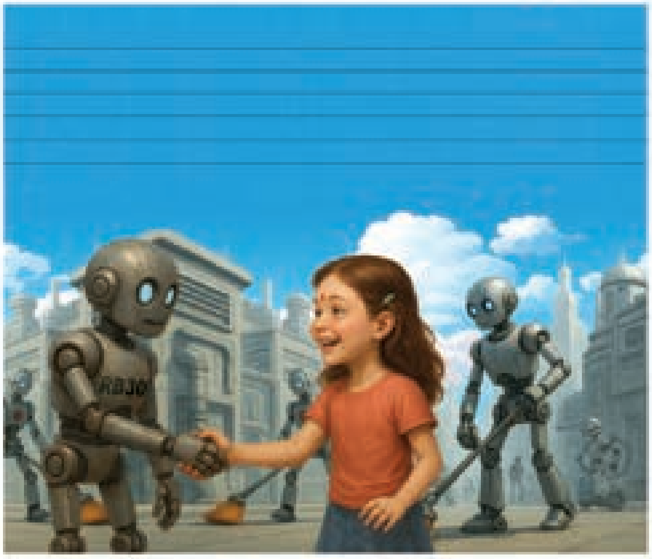

एक था 'रोबोट टाउन' जहाँ केवल रोबोट्स रहते थे। यहाँ सब कुछ स्वचलित था, रास्ते स्वयं साफ हो जाते, हर काम समय से होता, अँधेरा होते ही तारे स्वयं आसमान पर चमकने लगते। सब बढ़िया था, बस एक कमी थी तो त्योहार और उत्सव की।

एक दिन एक छोटी लड़की अनिषा वहाँ पहुँची। ''ये क्या? कितनी उदासी हैं यहाँ पर? क्या आप लोग दीवाली नहीं मनाते?'' हैरानी से उसने रोबोट्स परिवारों से पूछा।

उसके इस प्रश्न से सभी रोबोट्स बड़ी उलझन में थे। ''दीवाली! यह क्या होता हैं भला?'' रोबोट नंबर RB30 अपने प्रोग्राम लिस्ट को चेक करने के बाद उत्सुकता से पूछा।

''दीवाली तो दीपों का त्योहार हैं। हर वर्ष कार्तिक अमावस्या पर अपने निकट संबंधियों के साथ बहुत प्रेम, उल्लास से मनाया जाता है।'' अनिषा ने आँखें बड़ी कर उत्तर दिया।

''अच्छा! तो तुम मुझे टास्क लिस्ट दे दो।'' RB30 ने कहा।

RB30 रोबोट्स अपने प्रोसेसर में तेजी से अनिषा का बताया हुआ डाटा स्टोर करने लगा। उसने सभी सहयोगी रोबोट्स में कामों का बँटवारा कर किया।

सफाई RB01– तुम्हें सबकी बॉडी से हर मेटल पार्ट को चमकाना हैं।

पेंटर RB02–तुम्हें लेजर बीम से सुंदर रंगोली बनाना हैं।

शेफ RB03–तुम डिजिटल लड्डू एंड बाईनरी बर्फी बनाओ।

म्यूजिक RB04–तुम दीवाली का एक म्यूजिक बैंड बनाओ।

ड्रोन RB05–तुम दीवाली की रात पूरा आसमान रंगीन लाईट बल्बों से जगमग कर दो।

''डोंट वरी! सब काम समय पर हो जाएगा?'' RB30– ने कहा, ''लेकिन इस त्योहार को मनाने के पीछे असली कारण क्या है?''

अनिषा ने कुछ सोच कर कहा, ''मिलजुल कर मनाए गए त्योहार हमें एक–दूसरे का साथ देना सिखाते हैं। फिर सब कुछ हैप्पी–हैप्पी लगता हैं। समझे की नहीं।''

RB30–रुका, फिर बोला– ''मेरे पास तुम्हारे जैसा हार्ट तो नहीं है.. लेकिन मुझे सचमुच अच्छा अनुभव हो रहा है, थैंक्स।''

अनिषा ने मुस्कराकर उसका मेटल हाथ पकड़ा और कहा, ''मतलब तुम दीवाली का असली मतलब समझ गए।''

सभी को शुभ दीवाली कहते हुए अनिषा अपने घर लौट गई।

उस रात ''रोबो टाउन'' आलोक से नहा उठा। सभी रोबोट्स परिवार वालों ने दीवाली धूमधाम से मनाई। फिर तो हर वर्ष वहाँ सब प्रेम और खुशी–उल्लास से पारम्परिक डिजिटल दीवाली मनाने लगे।

– इन्दौर (म. प्र.)

पुस्तक परिचय

श्री. महावीर रवांल्टा बाल साहित्य जगत के अत्यन्त अनुभवी रचनाकार हैं। यहाँ विभोर प्रकाशन २४२ सर्वधर्म कालोनी सी-सेक्टर कोलार रोड, भोपाल-४२ से प्रकाशित उनकी दो पुस्तकों का परिचय प्रस्तुत है। प्रत्येक का मूल्य २००/- है।

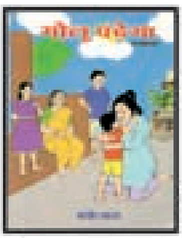

गोलू पढ़ेगा यह आप बच्चों के लिए प्रेरणादायक छः एकांकियों का रोचक संकलन है जो **श्री. महावीर रवांल्टा** की लेखनी से जन्मे हैं।

जुगनू की पढ़ाई यह बारह बाल कहानियों का मनोहर एवं बोधक संकलन है। जिसमें **श्री. महावीर रवांल्टा** की गहन बालकथा दृष्टि दिखाई देती है।

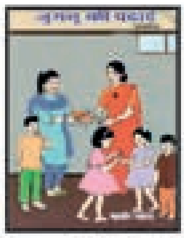

डॉ. वेदप्रकाश अग्निहोत्री समकालीन बाल साहित्य के प्रतिष्ठित हस्ताक्षर हैं। यहाँ आपकी श्वेतवर्णा प्रकाशन २१२ ए एक्सप्रेस न्यू अपार्टमेंट सुपर एमआयजी सेक्टर ९३ नोएडा-०४ (उ. प्र.) से प्रकाशित दो पुस्तकों का परिचय प्रस्तुत है।

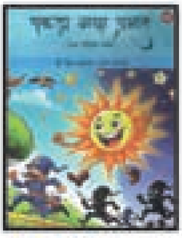

मूल्य-२४९/-

पकड़ गया प्रभात यह **डॉ. अग्निहोत्री** का बालगीतिका संग्रह है संस्कृति, प्रकृति और परिवेश पर केन्द्रित ये ५१ बालगीतिकाएँ सुगमतापूर्वक गेय हैं।

प्यारा बचपन सुन्दर रेखाचित्रों के साथ खिलखिलाती गुदगुदाती, बतियाती इन ५१ कविताओं का स्वरूप भी बालगीतिका का ही है, जिनकी सरसता अत्यन्त मोहक है।

मूल्य-१९९/-

बचपन है फुलवारी
मूल्य-१२५/-

कुछ लेखकों की रचनाओं में सरसता, मधुरता एवं चंचलता ऊपर से बुरकाई नहीं जाती वे उनका प्राकृतिक स्वभाव ही बन जाती हैं। अत्यन्त वरिष्ठ बाल साहित्यकार **श्री. राजा चौरसिया** की इस पुस्तक में उनकी ऐसी ही ३२ बाल कविताएँ मन में शहद जैसी पौष्टिक मिठास घोलती हैं।

प्रकाशक- पाथेय प्रकाशन, जबलपुर- (म. प्र.)

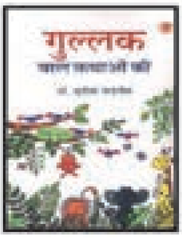

गुल्लक बाल कथाओं की
मूल्य- २४९/-

डॉ. सुनीता फड़नीस अनुभव सम्पन्न विज्ञान शिक्षिका हैं लेकिन बाल साहित्य रचते समय सीमित शब्दों में चुनिंदा बात को पाठक के हृदय में प्रवेश करवा देने में अत्यन्त सफल रचनाएँ लिखती हैं। प्रस्तुत पुस्तक में आपकी ऐसी ही लघु बाल कहानियाँ प्रस्तुत हैं।

प्रकाशक- संस्मय प्रकाशन, ८-सीएससी एडी. ब्लॉक,शालीमार बाग, दिल्ली-८८

लाल बुझक्कड़ काका के कारनामें

-देवांशु वत्स

बड़ा अनूठा है यह पेड़ वाला पुस्तकालय

– डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी

पेड़ वाली इस लाइब्रेरी में ६०० से अधिक पुस्तकें हैं, जिनमें कॉमिक्स से लेकर प्रसिद्ध व्यक्तियों की आत्मकथाओं एवं जीवनियों और बच्चों की फिक्शन तक की कई सारी पुस्तकें रखी गई हैं।

जब वाचनालय को किसी कमरे में खोला जा सकता था तो फिर पेड़ को ही इसके लिए क्यों चुना गया? यह प्रश्न मन में उठना स्वाभाविक है। असल में, विद्यालय के विद्यार्थियों को कुछ अलग अनुभव कराने के लिए ही पेड़ पर वाचनालय खोलने के इस अनूठे प्रयोग को मूर्तरूप दिया गया है। इस वाचनालय का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के मन में पढ़ने के स्वभाव को विकसित करना है।

विश्वभर में पुस्तकालयों की अपनी महिमा है। तभी देश-विदेश में अनेक प्रसिद्ध पुस्तकालयों की स्थापना हुई है। विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में तो अनिवार्य रूप से पुस्तकालय होते ही हैं। पाठ्यक्रम की पुस्तकें तक तो ठीक है, लेकिन आम पुस्तकों या ज्ञान-विज्ञान से जुड़ी पुस्तकों को पढ़ने की रुचि इस आईटी और इंटरनेट के युग में दिन-ब-दिन कम होती जा रही है। अब तो लोग टेबलेट, आईफोन और किंडल आदि में पुस्तकों को पढ़ना पसंद करते हैं। ऐसे में पुस्तकों और पुस्तकालयों की ओर लोगों, विशेषकर विद्यार्थियों को आकर्षित करने के लिए कुछ अभिनव प्रयोग भी किए जाने आवश्यक हैं।

ऐसा ही एक अनूठा प्रयोग असम में किया गया है। विद्यालयीन विद्यार्थियों को पुस्तकों के संसार से अवगत कराने और उनके प्रति रुचि जाग्रत करने के लिए असम के मरियानी नगर के एक गर्ल्स हाई स्कूल में एक अभिनव तरीके का उपयोग किया गया है। इस विद्यालय में एक पेड़ को ही पुस्तकालय यानी लाइब्रेरी का रूप दे दिया गया है। पुस्तकों को रखने के लिए टिन के छोटे-छोटे बक्सों को पेड़ में लगाया गया है।

वाचनालय को खड़ा करने के लिए टिन के छोटे-छोटे बक्सों का उपयोग किया गया है। जिन्हें पेड़ पर टांगा गया है। इस बक्सों को लाल रंग से रंगा गया है। सचमुच पेड़ वाला यह पुस्तकालय अपने आप में बहुत अनूठा है। यह विद्यार्थियों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। इससे पुस्तक प्रेम बढ़ने के साथ-साथ ज्ञान प्राप्ति की अभिलाषा भी बढ़ रही है। देखा-देखी ऐसे ही और भी अभिनव प्रयोग अन्य स्थानों पर भी होने चाहिए ताकि ज्ञान-विज्ञान को बढ़ाने तथा शिक्षाप्रद एवं प्रेरणा देने वाली पुस्तकों की ओर बच्चे आकर्षित हों और जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर हों। सचमुच पुस्तकों से बढ़कर कोई भी संगी-साथी या प्रेरणास्रोत नहीं हो सकता, ऐसे अनूठे प्रयोगों द्वारा ही यह बात सबके मन में बैठाई जा सकती है।

– दिल्ली

सबसे कहती है दीवाली

– बलदाऊ राम साहू
दुर्ग (छत्तीसगढ़)

आपस में हम प्रेम बढ़ाएँ
छोटों को भी गले लगाएँ
बाँटे खुशियाँ उल्लासित मन
भेद भूलकर घुलमिल जाएँ
दोनों हाथ बजाएँ ताली
सबसे कहती है दीवाली।

करें सफाई हम तन–मन की
जैसे करते घर–आँगन की
फूलों जैसा निर्मल–सुंदर
अंतर्भाव बने जन–जन की
रहे न कोई कोना खाली
सबसे कहती है दीवाली।

मन के भीतर दीप जलाएँ
अंतस का तम दूर भगाएँ
जग को खुशियाँ बाँटे हरदम
डगर–डगर हम दीप जलाएँ
रोटी भी हो सबकी थाली
सबसे कहती है दीवाली।

'देवपुत्र का नवीन अंक' आषाढ़ २०८२ यानी जुलाई २०२५ में प्रकाशित सचित्र, प्रेरक बाल साहित्य मासिकी 'देवपुत्र' का अंक हस्तगत हुआ। मुखपृष्ठ देखकर अनायास ही बचपन की मधुर स्मृतियों का जखीरा लेकर बरसों से खोई हुई मुस्कान लौट आई और होठों पर बेतरह खिलखिलाने लगी, और मैं बहुत पहले की तरह जब मैं जीया करती थी, की तरह तितली बनकर उड़ने लगी। वह इसलिए कि मस्त झमाझम बारिश में पानी से भरे गड्ढों और आँगन में लहराते चहबचों में छप-छपई-छपाक खेलना; तो कभी लाल, पीली, गुलाबी पहने हुए कागज की नावें और लकड़ी के आयताकार टुकड़े में एक डंडी गाड़कर झंडी लगे जहाज को तैरते हुए देखकर तालियाँ बजाता बचपन और बीच में कहीं से जामुनवाले चाचा सरवण की मीठी-बकबकी टेर 'काले-काले राह बाबूजी, काले काले राह गर्मी दे भगा बाबूजी गर्मी दे भगा' फिर नाक सुड़कते हुए बाबूजी से मिले दस-बीस पैसे लेकर भागना और मिट्टी के कसोरे में नमक से पगे, पत्ते पर धरकर मिले जामुनों को खाते हुए जामुनी-काले आड़े-तिरछे मुँह बनाना। सब एक साथ आँखों के सामने आ गया। अहा! बचपन के दिन भी क्या दिन थे उड़ते-फिरते थे?

इस जादुई पाश को जरा-सा ढीला करके दृष्टि आगे बढ़ाई बड़े भैया की बात, जो सच में 'अपनी बात' जैसी दमदार और प्रेरणादायक है वह यों कि इस बात ने बात ही बात में, दस जुलाई २०२५ को महर्षि वेदव्यास जयंती पर गुरु-पूर्णिमा यानी मन-आत्मा के उत्सवी और पुनीत अवसर पर हम सभी बच्चों व शिष्यों को अपने-अपने गुरुओं के प्रति नतमस्तक व कृतज्ञता-भाव व्यक्त करके आत्मिक संबंध को सुदृढ़ करने का स्मरण तो करवाया ही इसके साथ-साथ पानी पीजिए छानकर, गुरु कीजिए जानकर का Filter यानी छन्नी भी लगाकर सचेत कर दिया कि समर्पण के साथ सावधानी बरतना भी बहुत महत्वपूर्ण है। श्री. नारायण चौहान द्वारा 'गुरु रूप भगवा ध्वज' अत्यंत समसामयिक और प्रेरणादायक आलेख दिया गया है।

अपनी बात समूचे पाठक वर्ग को अत्यंत प्रेरक होने के साथ-साथ समयानुसार परिष्कार परिवर्तन परिशोधन परिमार्जन परिवर्धन हेतु भी सचेत करती है। मर्म स्पर्श करने वाले, सारगर्भित और प्रेरक संपादकीय के लिए प्रबुद्ध संपादक महोदय 'बड़े भैयाजी' को बहुत-बहुत साधुवाद एवं बधाई।

इस अंक में भी गत अंकों की भांति रोचक कहानियाँ, कविताएँ, मजेदार चित्रकथाएँ, और प्रेरणादायक तथा जानकारी से भरपूर आलेख और सूचनाएँ हैं।

पत्रिका में दिए चित्ताकर्षक रंगीन चित्र रचना की संप्रेषणीयता को बढ़ावा देते हैं और पढ़ने के लिए गुरुत्वाकर्षण बल का काम करते हैं।

पत्रिका में सम्मिलित सभी लेखकों को के लिए हार्दिक बधाई। अपनी देवपुत्र के बावन पृष्ठ 'गागर में सागर' सदृश्य इतनी श्रेष्ठ, रोचक तथा मन को बाँध रखने वाली साहित्यिक सामग्री लेकर आए हैं कि उनकी चर्चा करने में मुझे बावन घंटे भी कम लगेंगे।

सचमुच देवपुत्र का मनोरंजन और जानकारी से भरपूर जुलाई अंक संतुलित साहित्यिक और

जीवन की कला के गुर समाहित कर लाने में सफल रही है; इसीलिए तो यह दशकों से लाखों बच्चों का प्रिय बना हुआ है और मुझ जैसे बड़े बच्चों का भी। बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ सम्पादक महोदय एवं सहभागी लेखक वृंद।

- डॉ. इंदु गुप्ता, फरीदाबाद (हरियाणा)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक पत्रिका देवपुत्र माह जुलाई २०२५ का अंक पढ़ने का आज अवसर मिला।

मुखपृष्ठ पर चित्रित ऋतु अनुरूप सड़क पर इकट्ठा पानी में छई-छपाक करते नन्हें बच्चे जहाँ बचपन में लौटा देते हैं। वहीं काले-काले जामुन मुँह में पानी ला देते हैं। बाल अभिरुचि अनुरूप चित्ताकर्षक मनोहारी बहुरंगी मुखपृष्ठ बाल पाठकों को अपनी ओर सहज ही आकर्षित करेगा। बाल मनोविज्ञान आधारित संपादकीय में बाल मित्रों के मनोमस्तिष्क में गुरु शब्द की अवधारणा को न केवल स्पष्ट किया गया है, अपितु गुरु की जीवन में महत्ता को भी प्रतिपादित किया गया है। साथ ही गुरु के चयन में ध्यान रखने योग्य बातों को बड़े भैया ने बड़ी आत्मीयता से सुझाया है।

अगले पृष्ठ पर विशेष क्रम में व्यवस्थित अनुक्रमणिका पढ़कर सहज ही विश्वास हो जाता है कि पत्रिका में समाहित सामग्री विविध विधाओं और विविधताओं से समृद्ध व बालोपयोगी होगी।

बहुरंगी चित्र कहानी/कविताओं आलेखों को और अधिक रोचक व सुग्राह्य बनाने में अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

सुमन बाजपेयी, नीनासिंह सोलंकी, रामगोपाल राही, विमला रस्तोगी, नीलू सोनी की कहानियाँ रोचक व संदेशप्रद हैं। सुधा भार्गव, पवित्रा अग्रवाल, दिनेश दर्पण, हेमंत यादव की छोटी कहानी अपने छोटे कलेवर के बावजूद बड़ी सीख या महत्वपूर्ण संदेश बच्चों तक पहुँचा रही है।

बाल लेखनी के अंतर्गत खुशी चंदेवा की कविता सिंदूर बालमन में ओज और देशभक्ति की भावना जाग्रत करती है।

'आतंकवाद खत्म करना अब हमारी जिम्मेदारी' कविता की अंतिम पंक्ति बाल जगत व किशोरों के हृदय में कर्त्तव्य बोध जगाती है।

राजीव ताँबे की मूल मराठी बाल कहानी 'मोरू' का हिंदी अनुवाद डॉ. विशाखा ठाकुर ने बहुत रोचक शैली में किया है। बच्चों का स्वस्थ मनोरंजन होगा।

हरिशचंद्र पांडे का 'अनोखा घोड़ा' एवं सावित्री शर्मा का 'बादल फटते क्यों है?' रोचक व ज्ञानवर्धक संवाद है।

कल्याणमय आनंद की कविता एवं माँ की रसोई बाल कविताएँ बालपाठक मगन होकर पढ़ेंगे व गुनगुनाएँगे। नियमित सभी स्तंभ भी अपने उद्देश्य व शीर्षक अनुरूप पत्रिका में यथोचित स्थान बनाकर पत्रिका को समृद्ध व संतुलित व सार्थकता प्रदान कर रहे हैं।

बाल सुलभ गतिविधियों को सही दिशा दिखलाती, उकसाती प्रेरित करती 'बौद्धिक क्रीडा' के अंतर्गत सुधा दुबे, संकेत गोस्वामी, चांद मोहम्मद घोसी, रोचिका अरुण शर्मा की पहल तथा देवांशु वत्स व संकेत गोस्वामी की चित्रकथाएँ भी पत्रिका को विविधता प्रदान कर रही हैं।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि देवपुत्र का यह अंक भी बाल जगत के लिए उनमें सक्रियता, सृजनात्मक कौशल व संवाद क्षमता एवं उनके बहुमुखी विकास में सहायक सिद्ध होगा। आलस्य, तनाव, थकान को दूर कर उनके चेहरे पर छः इंच मुस्कान ले आएगा।

संपादक आ. गोपाल माहेश्वरी जी को कुशल संपादन व पत्रिका के सभी सम्माननीय रचनाकारों को हार्दिक बधाई।

- राजेन्द्र श्रीवास्तव, विदिशा (म. प्र.)

अष्ट लक्ष्मी

– सुशील सरित

यूँ तो हमें सभी इस तथ्य से परिचित हैं कि श्री. विष्णु जिन्हें त्रिदेवों में पालनकर्ता माना जाता है। उनकी अर्धांगनी के रूप में धन, यश, वैभव एवं सम्पन्नता का प्रतिरूप मानी जाने वाली श्री. लक्ष्मी जी को प्रतिष्ठा मिली लक्ष्मी–नारायण सर्वस्वीकार्य रूप माना गया किन्तु श्री. लक्ष्मी के भी आठ रूप हैं इस तथ्य पर सर्वप्रथम ध्यान वर्ष १९७० में प्रकाशित एक कविता अष्ट लक्ष्मी स्तोत्रम् से गया। इस स्तोत्र की रचना वैष्णव विद्वान श्री. यू. वी. विद्वान मुक्कुर श्री. निवासवर्धाचार्य स्वामीकल ने की थी। अष्टलक्ष्मियों का उल्लेख हमारे प्राचीन साहित्य में भी है। आज दक्षिण भारत के हिन्दू श्रद्धालुओं में अष्ट लक्ष्मी की आराधना बहुत लोकप्रिय हो चुकी है।

लक्ष्मी जी के आठों स्वरूप कमल पर विराजित हैं इनमें प्रथम हैं **आदि लक्ष्मी**।

भृगु पुत्री आदि लक्ष्मी (या महालक्ष्मी) की चार भुजाएँ हैं। एक हाथ में कमल दूसरे में ध्वज तथा अन्य दो हाथ अभय एवं वरद मुद्रा में हैं।

ऐश्वर्य लक्ष्मी की भी चार ही भुजाएँ हैं। वह श्वेत वस्त्रधारिणी हैं। उनके भी दो हाथ वरद एवं अभय मुद्रा में हैं तथा अन्य दो हाथों में कमल–पुष्प हैं। लक्ष्मी जी का तीसरा रूप **धन लक्ष्मी** छः भुजाधारी हैं। वे लाल वस्त्रधारिणी हैं। उनके एक हाथ से अभय मुद्रा में सिक्कों की वर्षा हो रही है शेष पाँच हाथों में शंख, चक्र, कलश, धनुष, बाण एवं कमल का पुष्प शोभित हैं।

फसल एवं अनाज की देवी **धान्य लक्ष्मी** अष्ट भुजा धारिणी हैं। उनके वस्त्र हरे रंग के हैं छः हाथों में गदा, दो कमल पुष्प, बालियाँ (फसल की) गन्ना, कदली फल हैं तथा दो हाथ अभय एवं वरद मुद्रा में हैं। लक्ष्मी जी का पाँचवा स्वरूप **गज लक्ष्मी** चतुर्भुजी स्वरूप हैं। यह पशुधन प्रदाता हैं। इनके वस्त्र भी धन लक्ष्मी के समान लाल हैं। दोनों ओर से दो हाथी उन्हें अपनी सूँड से जल लेकर स्नान करा रहे हैं। दो हाथों में कमल पुष्प एवं दो हाथ वरद एवं अभय मुद्रा में हैं। लक्ष्मी जी का छठा स्वरूप **संतान लक्ष्मी** के भी छः भुजाएँ हैं।

दो भुजाओं में तो कलश हैं जिनके मुख आम्र पत्तियों से बंद हैं एवं जिन पर नारियल रखा हुआ, दो हाथों में ढाल एवं तलवार शोभित हैं एक हाथ अभय मुद्रा में है और एक हाथ में कमलपुष्प हाथ में लिए शिशु विराजित है।

सातवाँ स्वरूप **वीर लक्ष्मी** या **धैर्य लक्ष्मी** अष्ट भुजाधारी हैं। लाल वस्त्र धारण किए हुए हैं एक हाथ वरद मुद्रा में है शेष सात हाथों में शंख, चक्र, धनुष, बाण, त्रिशूल एवं ताड़ वृक्ष की पंक्तियों की गठरी हैं।

अंतिम आठवाँ स्वरूप **विजय लक्ष्मी** या **जय लक्ष्मी** भी अष्टभुजा धारी है। यह भी लाल वस्त्र में है। दो हाथ अभय एवं वरद मुद्रा में है शेष छः हाथों में चक्र शंख, तलवार पाश, ढाल एवं कमल विराजित हैं।

कुछ विद्वान इन नामों में विद्या लक्ष्मी, सौभाग्य लक्ष्मी, राज्य लक्ष्मी, के नाम भी जोड़ते हैं। भारतीय पौराणिक संदर्भों के अनुसार समुद्र मंथन में गज लक्ष्मी की ही प्राप्ति हुई भी जिनके कारण इन्द्र अपनी खोई सम्पत्ति प्राप्त हुई।

अष्ट लक्ष्मी का प्रतीक सितारा माना जाता है। दो आयत जिनका केन्द्र एक ही हो किन्तु वे ४५ डिग्री पर हों) अष्टलक्ष्मी का प्रथम मंदिर चेन्नई तमिलनाडू एलियटस तट के निकट है। यहाँ चार तलों में लक्ष्मी जी के आठों स्वरूपों के एवं युगल स्वरूप श्री. विष्णु–लक्ष्मी के दर्शन होते हैं।

महालक्ष्मी एवं महाविष्णु की प्रतिमा दूसरे तल पर विराजित है। यही से अष्ट लक्ष्मी पूजन प्रारम्भ होता है। तीसरे तल पर संतान लक्ष्मी, विजय लक्ष्मी,

विद्या लक्ष्मी एवं गज लक्ष्मी के स्वरूपों के दर्शन होते हैं। चौथे तल पर केवल धन लक्ष्मी की प्रतिमा विराजित है वापस आते हुए प्रथम तल पर आदि लक्ष्मी धान्य लक्ष्मी एवं धैर्य लक्ष्मी के स्वरूप विराजित हैं। मंदिर में दशावतार, गुरुवायूरप्पन, गणपति, धन्वन्तरी एवं आँजनेय की प्रतिमाएँ भी शोभित हैं। मंदिर की सभी प्रतिमाएँ पूर्वोन्नमुखी हैं मंदिर के शिविर पर ३२ कलश हैं जिनके शीर्ष पर लगा कलश स्वर्ण पत्र मंडित है।

अष्टलक्ष्मी के अन्य प्रसिद्ध मंदिर दिलसुख नगर हैदराबाद एवं सुगरलैण्ड होस्टन यू. एस. ए. में स्थपित किए गए है।

संक्षेप में कहा जाए तो श्री. लक्ष्मी के आठों स्वरूप श्रद्धालुओं को धन, यश, संतान, सम्मान एवं समृद्धि के सभी रूप प्रदान करते हैं।

– आगरा (उ. प्र.)

भूल - भुलैया

ट से टमाटर

लाल-लाल ताजे टमाटर
हैं मजेदार। इन्हें खाने के लिए
भूखी बकरी है तैयार।

प्रिय मित्रो! आप बकरी को टमाटर के पास पहुँचाइए। ताकि टमाटर खाकर बकरी अपनी भूख मिटा सके।

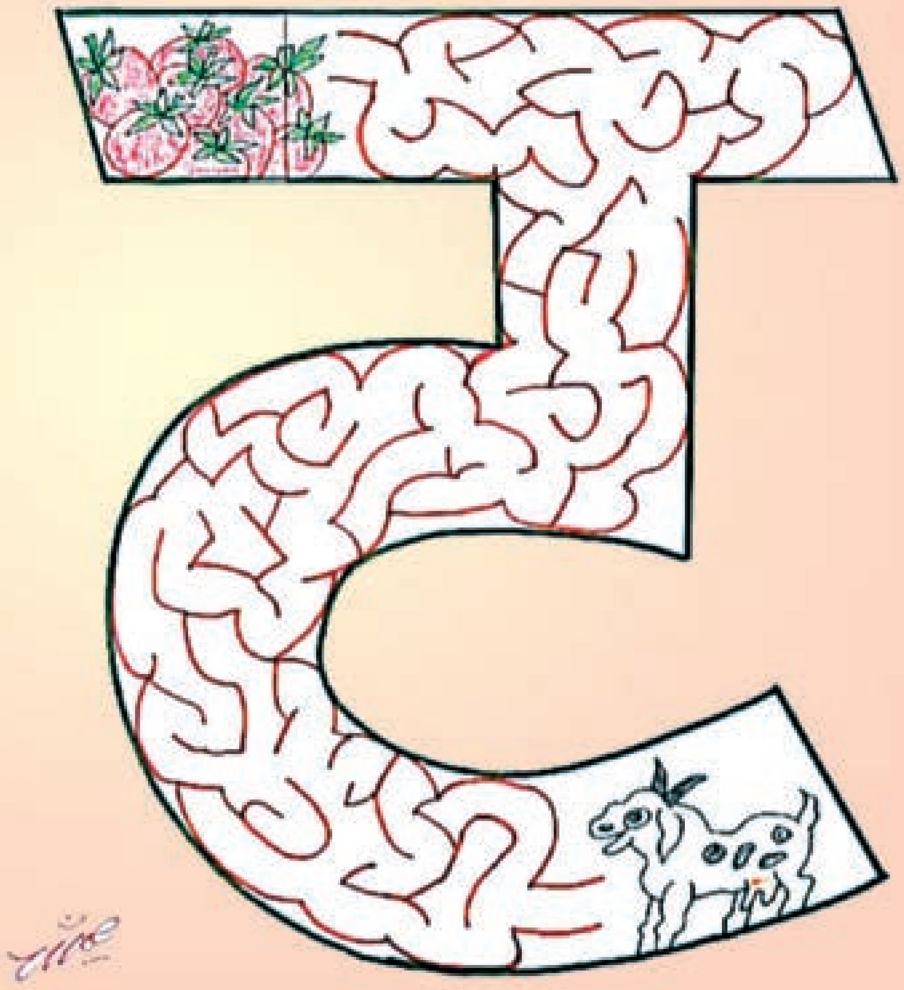

- चाँद मोहम्मद घोसी
मेड़ता सिटी-३४१५१०
(राजस्थान)

पुरस्कार

केसर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२५

वरिष्ठ समाज सेवी श्री. रमेश गुप्ता द्वारा स्थापित केशर पूरन स्मृति पुरस्कार हेतु अलग से कोई प्रविष्टि आमंत्रित नहीं की जाती बल्कि जनवरी २०२५ से दिसम्बर २०२५ के मध्य 'देवपुत्र' के 'पुस्तक परिचय' स्तंभ में परिचयार्थ प्रकाशित कृतियों में से किसी एक का चयन कर यह पुरस्कार दिया जाता है।

पुरस्कार न चाहने वाले लेखक अपनी कृतियाँ भेजते समय एक संक्षिप्त सूचना 'पुरस्कार के लिए नहीं केवल परिचय प्रकाशन हेतु' लिखित रूप में दे सकें तो उन कृतियों को प्रतियोगिता परिधि से बाहर रखा जा सकेगा। आपकी प्रकाशित कृतियाँ 'भारतीय बाल साहित्य शोध संस्थान' की अमूल्य धरोहर बनती है इसलिए प्रकाशित कृतियाँ प्रेषित अवश्य करें।

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

'देवपुत्र' द्वारा आयोजित निम्नांकित प्रतियोगिता एवं पुरस्कारों के लिए आपकी प्रविष्टियाँ ३१ दिसम्बर २०२५ तक सादर आमंत्रित हैं।

सभी प्रतियोगिताओं के लिए सामान्य नियम- १) एक प्रतियोगिता हेतु एक ही प्रविष्टि भेजें। २) प्रविष्टि पर प्रतियोगिता/पुरस्कार का नाम अपना पूरा नाम, पता, पिनकोड एवं व्हाट्सएप नम्बर अवश्य लिखें। ३) प्रविष्टि हेतु रचनाएँ सुवाच्य अक्षरों में हस्तलिखित अथवा कम्प्यूटर पर टाइप की हों। ४) प्रविष्टि संपादक देवपुत्र-४०, संवाद नगर, इन्दौर-४५२००१ (म. प्र.) पर डाक द्वारा अथवा editordevputra@gmail.com पर मेल करें। ५) निर्णायकों का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा। ६) पुस्तकों के अतिरिक्त प्रतियोगिता में प्राप्त सभी रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार 'देवपुत्र' के पास सुरक्षित होगा। ७) कृपया रचनाओं के स्वरचित होने का प्रमाणपत्र अवश्य भेजें।

श्री. भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०२५

'देवपुत्र' के पूर्व व्यवस्थापक श्री. शांताराम शंकर भवालकर जी की पावन स्मृति में आयोजित यह स्वरचित बाल कहानी प्रतियोगिता केवल कक्षा ४ से १२ तक अध्ययनरत बालक-बालिकाओं के लिए ही है। बच्चे अपने किसी भी मनपसंद विषय पर स्वयं की लिखी हुई कोई बाल कहानी इस प्रतियोगिता में भेज सकते हैं।

पुरस्कार होंगे- प्रथम १५००/- द्वितीय ११००/- तृतीय १०००/-
प्रोत्साहन (२) ५००/- ५००/-

मायाश्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार २०२५

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार स्व. डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ की प्रेरणा से प्रायोजित यह पुरस्कार जनवरी २०२५ से दिसम्बर २०२५ के मध्य प्रकाशित हिन्दी बाल साहित्य की 'यात्रा वृत्तान्त' विधा के लिए निश्चित किया गया है। प्रविष्टि स्वरूप उक्त अवधि में प्रकाशित यात्रा वृत्तांत की प्रकाशित पुस्तक ३ प्रतियों में भेजना आवश्यक है।

सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पर पुरस्कार निधि ५०००/- होगी।

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०२५

वरेण्य बाल साहित्य सर्जक डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा स्थापित इस पुरस्कार हेतु इस वर्ष विषय 'भारतीय कुटुम्ब व्यवस्था विषय पर केन्द्रित बाल कहानियाँ' निश्चित किया गया है। आप इस विषय पर अपनी बाल कहानी प्रविष्टि स्वरूप अवश्य भेजिए।

पुरस्कार होंगे- प्रथम १५००/- द्वितीय १२००/- तृतीय १०००/-
प्रोत्साहन (२) ५००/- ५००/-

कविता- प्रवासी पक्षी दिवस : ११ अक्टूबर

मित्र पधारे

– डॉ. मीरासिंह 'मीरा'

दूर देश से उड़ते-उड़ते, आए अनगिन मित्र हमारे।
सभी दिशा में हैं छितराए, रंग-बिरंगे प्यारे-प्यारे।।

कितनी रौनक आज यहाँ पर
उत्सव का माहौल हुआ है।
चूँ-चूँ, चीं-चीं, चूँ-चूँ, चीं-चीं
सभी दिशा में गूँज रहा है।।

सुनो मित्र! कुछ हाल बताओ
क्यों लगते बेहाल ? बताओ।
रहते हो किस देश बताओ ?
मौन इशारों में समझाओ।।

ताल तलैया नदी सरोवर
आज मगन खुश सारे पोखर।
दूर देश से मित्र पधारे
कुदरत के अनमोल धरोहर।।

आओ, पास हमारे आओ
पल फुरसत के यहाँ बिताओ।
लेकर मीठी याद सुहानी
फिर अपने घर वापस जाओ।।

– बक्सर (बिहार)

कविता

दीप जलाओ

– पंकज मिश्र 'अटल'

जला सको तो दीप जलाओ,
देहरी आँगन सब चमकाओ।

नभ में तारे मुस्काते हैं,
और धरा पर हँसते दीपक।
दीप कतारें लगती मानों,
नभ की ओर चले हों दीपक।
भू से लेकर दूर गगन तक,
दीपों के ही सुमन खिलाओ।
जला सको तो दीप जलाओ।।

भाग रहा मुँह छिपा अँधेरा,
हुआ निशा में आज सबेरा।
और रोशनी के शिशुओं ने,
भू पर आकर डाला डेरा,
अँधियारे के इस सागर में,
दीपों की एक नाव चलाओ
जला सको तो दीप जलाओ।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०९/२०२५ प्रेषण तिथि ३०/०९/२०२५ प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

देवपुत्र का सदस्यता शुल्क है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २५०/- १५ वर्षीय सदस्यता २५००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १८०/- प्रति अंक

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइए

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी